ISSN 2394-8485

मासिक

गुरमत ज्ञान

३/-

माघ-फाल्गुन संवत् नानकशाही ५५७ फरवरी 2026 वर्ष १९ अंक ६

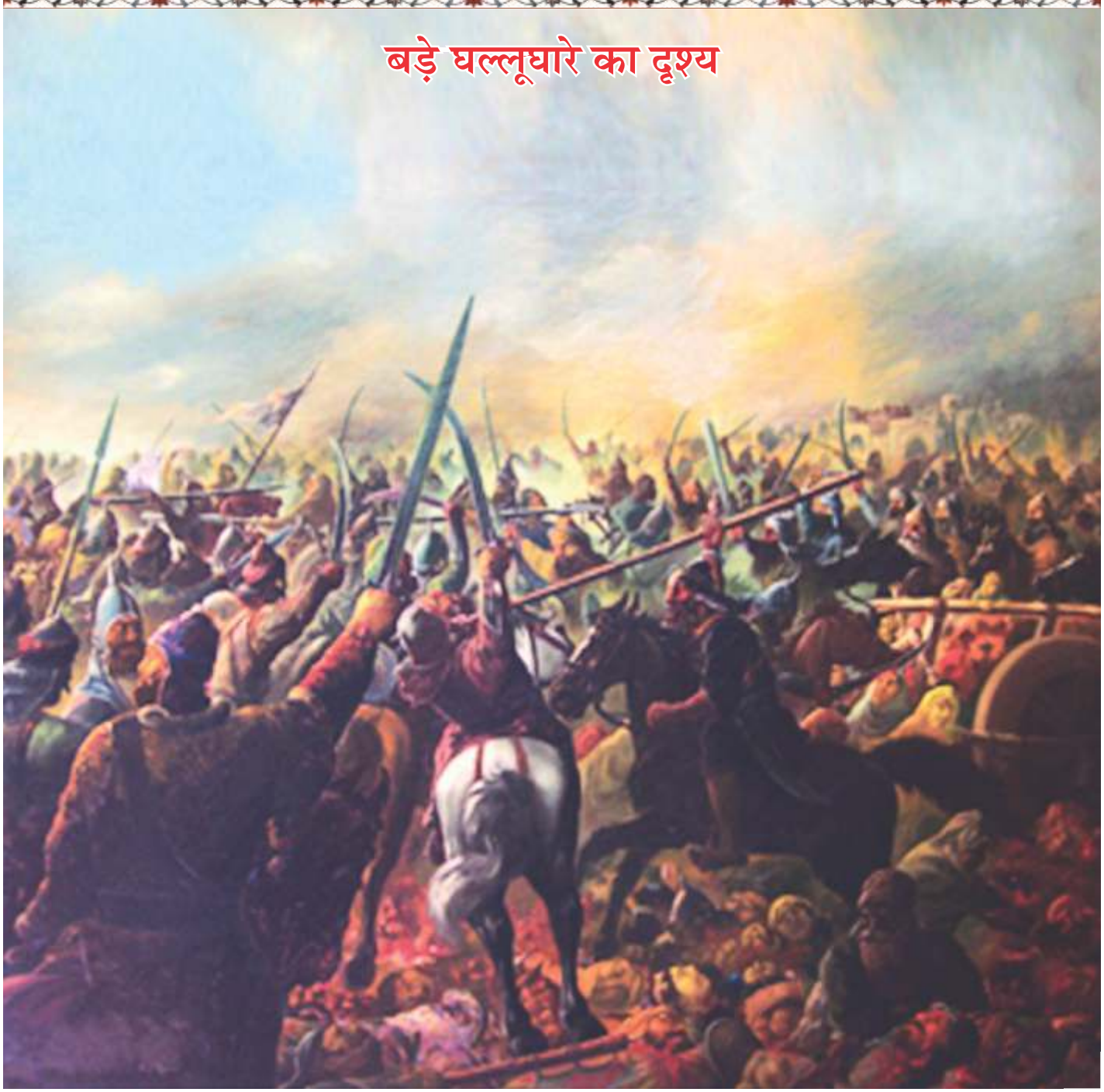

बड़े घल्लूघारे का दृश्य

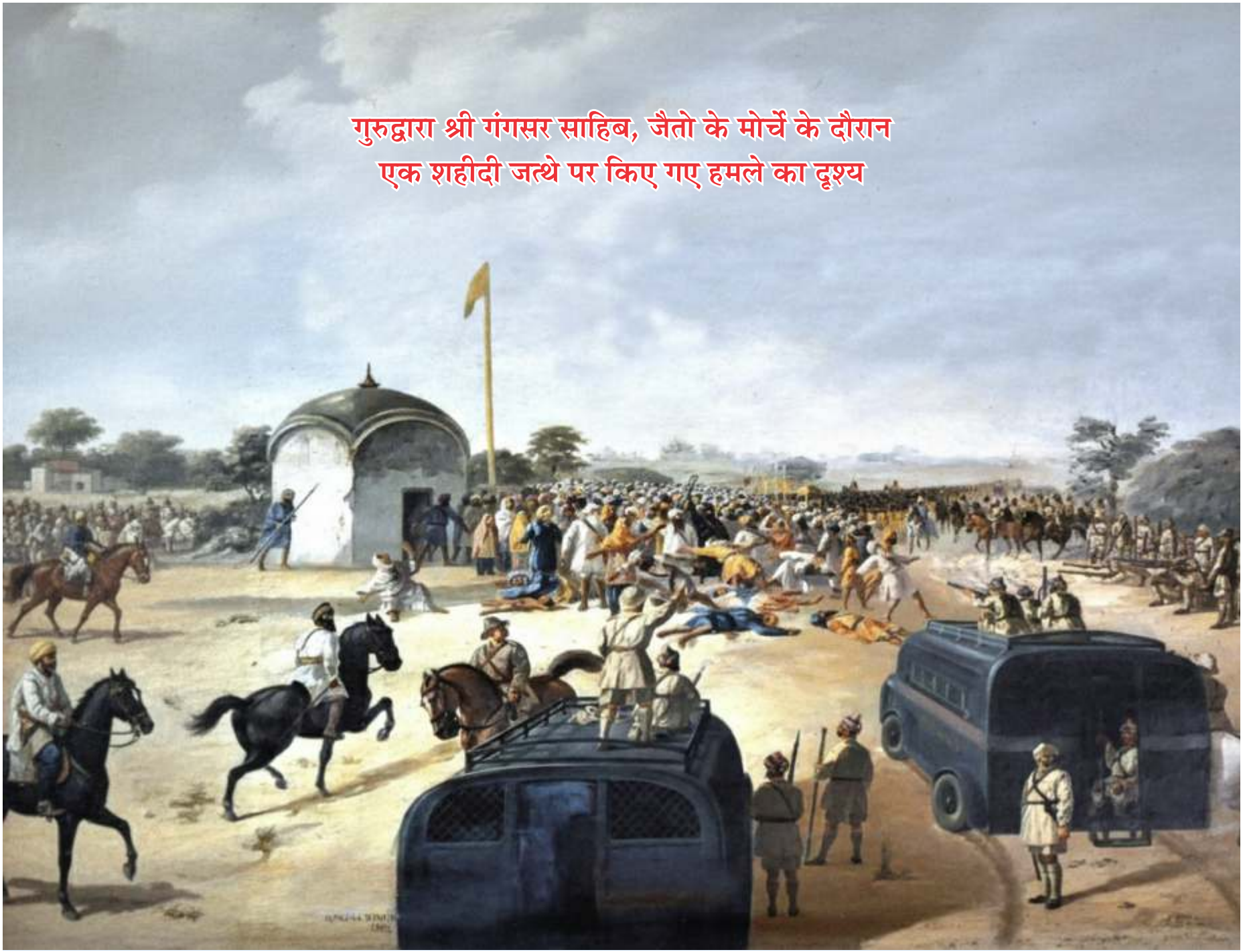

गुरुद्वारा श्री गंगसर साहिब, जैतो के मोर्चे के दौरान
एक शहीदी जत्थे पर किए गए हमले का दृश्य

ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि॥

गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

माघ–फाल्गुन संवत् नानकशाही 557
वर्ष 19 अंक 6 फरवरी 2026

संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा	
सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब -143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4
संपादकीय 6
सर्वधर्म समभाव के संवर्द्धक थे सिक्ख गुरु साहिबान 9
–श्री शंभू दयाल वाजपेयी
युगपुरुष श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी (कविता) 12
–सरदार हरचरन सिंघ (सूदन)
'बेगमपुरा' के सृजनकर्ता : भक्त रविदास जी 13
–डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ
बड़ा घल्लूघारा : सिक्ख इतिहास का अविस्मरणीय अध्याय 19
–स. परमजीत सिंघ 'सुचिंतन'
गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब का प्रबंध संभालने में सरदार तेजा सिंघ समुंदरी की भूमिका 24
–डॉ. हरप्रीत कौर
अकाली मोर्चों में जैतो के मोर्चे का स्थान 29
–प्रो. हरभिंदर सिंघ
पंजाब के भाग्य का निर्णायक : सभरावां का युद्ध 36
–डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'
रिजक की तलाश तथा उसकी चिंता 42
–डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'
सभि रस मिठे मंनिऐ सुणिऐ सालोणे॥ 44
–डॉ. मनजीत कौर
ख़बरनामा 48

गुरबाणी विचार

फलगुनि मनि रहसी प्रेमु सुभाइआ ॥
अनदिनु रहसु भइआ आपु गवाइआ ॥
मन मोहु चुकाइआ जा तिसु भाइआ करि किरपा घरि आओ ॥
बहुते वेस करी पिर बाझहु महली लहा न थाओ ॥
हार डोर रस पाट पटंबर पिरि लोड़ी सीगारी ॥
नानक मेलि लई गुरि अपणै घरि वरु पाइआ नारी ॥१६ ॥
बे दस माह रुती थिती वार भले ॥
घड़ी मूरत पल साचे आए सहजि मिले ॥
प्रभ मिले पिआरे कारज सारे करता सभ बिधि जाणै ॥
जिनि सीगारी तिसहि पिआरी मेलु भइआ रंगु माणै ॥
घरि सेज सुहावी जा पिरि रावी गुरमुखि मसतकि भागो ॥
नानक अहिनिसि रावै प्रीतमु हरि वरु थिरु सोहागो ॥१७ ॥१ ॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११०९)

प्रथम पातशाह श्री गुरु नानक देव जी तुखारी राग में 'बारह माहा' नामक बाणी की इन पावन पंक्तियों में क्रमश: फाल्गुन मास के ऋतु-वर्णन द्वारा मनुष्य-मात्र को अहंकार एवं सांसारिक मोह-माया से ऊपर उठ कर दैवी गुणों का संचार करने और प्रभु-नाम के चिंतन, मनन और व्यवहार द्वारा जीवन सफल करते हुए प्रभु-मिलन का गुरमति मार्ग बख़्शिश करते हैं।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि शीत ऋतु के चले जाने के बाद फाल्गुन मास में साधारणत: लोग होली खेलते हुए खुशियां मनाते हैं, परंतु जिस जीव-स्त्री ने मन में फाल्गुन मास में प्यारे प्रियतम परमात्मा का प्रेम बसा लिया, वास्तव में वही (आत्मिक) आनंद को प्राप्त कर सकी है। जिस जीव मे अहं-भाव का त्याग किया वही आनंदमय अवस्था को प्राप्त कर सका है।

अहं-भाव का त्याग करना प्रत्येक जीव के वश की बात नहीं है। इस तथ्य को दर्शाते हुए गुरु जी कथन करते हैं कि उसी के मन में से सांसारिक मोह-माया का त्याग हो पाया है जिस पर प्रभु-

मालिक ने स्वयं कृपा-बख़्शिश की। जीव-स्त्री अनेक (धार्मिक कहे जाने वाले) बाहरी शृंगार करती है, मगर उससे प्रभु-मिलन का अवसर प्राप्त नहीं होता। आत्मा की प्रभु-मिलन की जिज्ञासा का वर्णन करते हुए गुरु जी कथन करते हैं कि मुझ पर प्रभु प्रसन्न नहीं, इसी लिए मैं 'साचे महल' में स्थान नहीं पा सकी । दूसरी ओर, जब मैंने प्रिय को पसंद रूहानी–नैतिक गुणों का शृंगार कर लिया, जब मैंने गुण रूपी रेशमी वस्त्र धारण कर लिए, जब सच्चे गुरु ने मुझे प्रभु-मिलन का गुरमति मार्ग बता दिया, तब मैंने अपने हृदय-रूपी घर में ही प्रभु-मिलन को प्राप्त कर लिया। जीव-स्त्री को प्रभु-प्रियतम मिल गया, जीवन का उद्देश्य पूर्ण हो गया।

श्री गुरु नानक देव जी 'बारह माहा' नामक बाणी की अंतिम पउड़ी में कथन करते हैं कि जो जीव-स्त्री सतिगुरु से भेंट हो जाने से प्रभु-मिलन के मार्ग की समझ प्राप्त कर लेती है और प्रभु-चिंतन, मनन एवं निर्मल जीवन-व्यवहार करती है, उसके लिए दस और दो अर्थात् बारह के बारह महीने ही अच्छे हो गए! इन बारह महीनों में आने वाली सभी ऋतुएं, तिथियां और दिन, सभी अच्छे हो गए। सभी मुहूर्त, सभी घड़ियां और पल सफल हो गए जब सदास्थिर स्वामी मिल गए। प्रभु-मिलन से समस्त जीवन-कार्य निर्मल व रसिक हो जाते हैं। करता पुरख जीव-स्त्री को स्वयं से मिलाने की युक्तियां जानता है अर्थात् जीव-स्त्री ने मात्र स्वयं का समर्पण करना है, शेष सफलता स्वत: मिलती जाती है। जो जीव-स्त्री गुणों का शृंगार करती है वही प्रभु-प्रति के प्यार की पात्र लगती है। प्रभु-मिलन का अनुभव हो गया तो वह जीवन-काल में आनंद ही आनंद लेती है। उसका हृदय रूपी घर प्रभु की सुहावनी सेज बन जाता है, क्योंकि गुरु-उपदेश को वह नहीं भूलती, अपना मुख सदैव गुरु अथवा गुरु-उपदेश की ओर रखती है। सतिगुरु जी कथन करते हैं कि ऐसी जीव-स्त्री रात-दिन प्यारे प्रभु-मालिक को ही स्मरण करती रहती है। प्रभु-पति उसका सदास्थिर सुहाग बन जाता है। ऐसी जीव-स्त्री ही मानव-जीवन का मूल उद्देश्य पहचानते हुए, उसमें रूहानी गुणों का संचार करते हुए गुरु-ज्ञान के प्रकाश में सर्वोच्च रूहानी आनंद की अवस्था को प्राप्त कर लेती है।

संपादकीय

घल्लूघारे एवं मोर्चे : हमारा गौरवमयी इतिहास

सिक्ख कौम अनेक संघर्षों, घल्लूघारों एवं मोर्चों के गौरवमयी इतिहास के दौर में से गुज़र कर मौजूदा समय में भी हक, सच व न्याय की बात करती हुई, सरबत्त के भले की अरदास करती है और करती रहेगी। सिक्ख इतिहास के पन्नों को पलटते हुए जब हम फरवरी माह में घटित घटनाक्रम को पढ़ते हैं तो ज्ञात होता है कि यह महीना प्रत्येक वर्ष पंथक स्तर पर हक-सच की पुनर्स्थापि के लिए लड़े गए लंबे संघर्ष की दास्तान याद कराता है। इस संघर्ष में से कौम कैसे गुज़री है, इस बाबत सिक्ख इतिहास की पुस्तकें गवाही भरती हैं। फरवरी माह अनेक रक्तरंजित घटनाओं के ऐतिहासिक और ख़ूनी संघर्ष की बात याद कराता है। इसी महीने में सिक्ख पंथ पर अफगान हमलावर अहमद शाह अब्दाली ने सन् १७६२ ई. में बड़ी संख्या में अपनी फौज द्वारा हमला कर सिक्ख पंथ के अस्तित्व को मिटाने के दुष्ट इरादे को अमल में लाने का यत्न किया। मलेरकोटला के समीप कुप्प-रुहीड़ा की धरती पर उसने एक बड़े सिक्ख समूह को घेर कर सिक्ख पंथ की नसलकुशी करने के इरादे से हमला किया। यह सिक्ख समूह सिक्ख परिवारों का समूह था, जिसमें बहुत बड़ी संख्या में सिक्ख स्त्रियां, बच्चे व बुज़ुर्ग शामिल थे। सिक्खों की संख्या अब्दाली की फौज की संख्या के सामने बहुत कम थी। अब्दाली अचानक तेज़ गति से सिक्ख समूह पर आ हमलावर हुआ था। शूरवीर योद्धा सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया, सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया, सरदार चढ़त सिंघ आदि सिक्ख सरदारों के नेतृत्व में अनेक सिक्ख योद्धाओं ने अब्दाली के हमले को रोकने के लिए ज़ोरदार और बेमिसाल जद्दोजहद की। सिक्ख इतिहास के रचनाकारों ने लिखा है कि सिक्ख परिवारों को बचाने की सिक्खों ने बड़ी कोशिश की, क्योंकि उन्हें मालूम था कि उनके इस दल में कौम का भविष्य 'सिक्ख बच्चे' बड़ी संख्या में शामिल हैं। फिर भी सिक्ख पंथ का इस घल्लूघारा में सपरिवार नुकसान हुआ। इस दौरान हुआ जानी नुकसान कोई कम नहीं था। लगभग तीस हज़ार की संख्या में जानी नुकसान को सहन कर अपना अस्तित्व बचाए रखना और अपना मानसिक व आत्मिक संतुलन बरकरार

रखना विश्व भर में मात्र गुरु नानक नाम-लेवा सिक्ख पंथ व श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा सृजित खालसा पंथ के हिस्से ही आया है। यह याद रहे कि इस घल्लूघारा के कुछ महीने बाद ही सिक्खों ने श्री अमृतसर साहिब में अब्दाली की फौज पर हमला कर उसे यह एहसास कराया कि सिक्ख पंथ में अभी भी उसका विरोध करने व उसे भगाने का दम बाकी है। इसके बाद अब्दाली सिक्ख पंथ की तरफ गलत इरादे से देखने तक का हौसला न कर सका और श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर साहिब का अपमान किए जाने के बदले में अपनी करनी का फल भोगता हुआ इस फ़ानी संसार से कूच कर गया। ख़ालसा ने विभिन्न सिक्ख मिसलों के अधीन पंजाब पर और शेर-ए-पंजाब महाराजा रणजीत सिंघ ने पंजाब व पंजाब से बाहर दूर-दूर तक 'ख़ालसा की फतह' के झंडे झुला दिए थे तथा नये मील-पत्थर स्थापित किये थे। परंतु, संघर्ष भरी दास्तान अभी ख़त्म कहाँ हुई थी! महाराजा रणजीत सिंघ के देहांत के बाद भी सिक्ख कौम को अनेक चुनौतियों ने आ घेरा।

२०वीं सदी में अंग्रेज़ शासकों-प्रशासकों के ज़ुल्म-जब्र के ख़िलाफ़ गुरु नानक नाम-लेवा सिक्ख पंथ को कई मोर्चे लगाने पड़े। इनमें से 'साका श्री ननकाणा साहिब' तथा 'जैतो का मोर्चा' अविस्मरणीय सिक्ख इतिहास की सृजना करते हुए हमारे सामने आ खड़े होते हैं। विदेशी शासक सिक्ख पंथ के जान से भी प्यारे गुरुद्वारा साहिबान की पवित्रता को भंग करने के भद्दे यत्न कर रहे थे। समय के बीतने के साथ-साथ गुरुद्वारा साहिबान के महंत कुकर्मी और ऐशप्रस्त होकर संगत के धार्मिक जज़बातों को ज़ोरदार ठेस पहुंचा रहे थे। वे पवित्र गुरुद्वारा साहिबान में अनैतिक कर्म कर रहे थे। गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब का महंत नारायण दास दायरे से बाहर जाकर मनमानियां कर रहा था। जब सिक्ख संगत ने उसके अपवित्र हाथों में से गुरु-घर का प्रबंध छीन कर सिक्ख पंथ के हाथ में देने का संघर्ष आरंभ किया तो तत्कालीन हाकिमों की शह पर उसने गुरुद्वारा साहिब की हदूद में गुंडे-बदमाश इकट्ठा कर लिए। इसी घटनाक्रम के अंतर्गत जत्थेदार लछमण सिंघ धारोवाली के नेतृत्व में गुरुद्वारा साहिब का प्रबंध लेने के लिए शांतमयी रहने का प्रण लेकर गए जत्थे को बंदूकों, टकूओं व गंडासों के साथ हमला कर शहीद कर दिया गया। इस साके में सैकड़ों सिक्ख शहीद हुए मगर गुरबाणी के महावाक्य— "कूड़ निखुटे नानका ओड़कि सचि रही" के अनुसार, तत्कालीन निज़ाम को सिक्खी आस्था के आगे झुकना पड़ा। इस प्रकार

गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब का प्रबंध सिक्ख पंथ के हाथों में आ सका।

ऐसा ही एक संघर्ष कौम को तब करना पड़ा जब रियासत फरीदकोट में गुरुद्वारा श्री गंगसर साहिब, जैतो का मोर्चा समकालीन अंग्रेज़ सरकार के गुरुद्वारा साहिब में नाजायज हस्तक्षेप के प्रतिक्रम के रूप में लगा। सिक्ख पंथ के साथ चट्टान की भाँति खड़े रहने वाले, पंथक भावना के धारक नाभा के सिक्ख राजा सरदार रिपुदमन सिंघ के साथ राजनैतिक स्तर पर हो रहे अन्याय के ख़िलाफ़ गुरु नानक नाम-लेवा सिक्ख शांतमयी ढंग से रोश प्रकट कर रहे थे। इस समय सिक्ख संगत ने सिक्ख पंथ की प्रतिनिधि संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के नेतृत्व में शांतमयी संघर्ष किया। यह संघर्ष बहुत लम्बा चला। तत्कालीन सरकार ने इस संघर्ष को नाकाम करने के लिए हर पैंतरा इस्तेमाल किया, मगर सिक्खी आस्था के आगे सरकार को अतंत: झुकना ही पड़ा। यह याद रहे कि इस ऐतिहासिक सिक्ख संघर्ष में सिक्खों का ज़ोरदार समर्थन ग़ैर-सिक्ख राजनैतिक नेताओं ने भी किया। २१ फरवरी, १९२४ ई. को श्री अकाल तख़्त साहिब से जैतो पहुँचे ५०० सिक्खों के शहीदी जत्थे पर पुलिस ने गोलियां चला कर बड़ी घटना को अंजाम दिया। इसमें लगभग १०० सिक्ख शहीद हुए और २०० के करीब सिक्ख घायल हुए। इसके बाद भी लगभग डेढ़ वर्ष तक सिक्ख पंथ को घोर संघर्ष के दौर में से गुज़रना पड़ा। अंतत: सरकार को २७ जुलाई, १९२५ ई. को घुटने टेकने पड़े। गुरुद्वारा गंगसर साहिब में सरकार द्वारा श्री अखंड पाठ साहिब करने पर लगाई गई पाबंदी हटाने के एलान के साथ ७ अगस्त, १९२५ ई. को १०१ श्री अखंड पाठ साहिब संपूर्ण करते हुए जैतो के मोर्चे को फ़तह किया गया।

घल्लूघारों एवं मोर्चों से भरपूर हमारा गौरवमयी सिक्ख इतिहास हमें वर्तमान समय में भी कई संकटों में हर प्रकार के ज़ुल्म, जब्र व अन्याय के विरुद्ध डटने, लड़ने एवं हक-सच की स्थापि हेतु तनदेही के साथ यत्नशील होने के लिए प्रेरणा देता आ रहा है, जिससे मार्गदर्शन लेकर सिक्ख कौम सदा चढ़दी कला में रही है और रहेगी।

सर्वधर्म समभाव के संवर्द्धक थे सिक्ख गुरु साहिबान

*–श्री शंभू दयाल वाजपेयी**

सिक्ख गुरुओं का विरोध और संघर्ष किसी समुदाय या धर्म विशेष के खिलाफ नहीं था। मूलत: वे संत थे। ऐसा वे कर भी नहीं सकते थे। वे धर्म के आधार पर भेदभाव करने वाली प्रत्येक सत्ता आदि के खिलाफ थे। वे समता-स्वतंत्रता-मूलक राजनीतिक व्यवस्था के आग्रही थे। वे सत्ता-संरक्षित धर्मांतरण के प्रयासों के भी खिलाफ थे। वे सत्ता हथियाने के आकांक्षी नहीं थे। धार्मिक व सामाजिक सुधारों के साथ-साथ राजनीतिक सुधार भी उनके मिशन का हिस्सा थे। वे मानते थे कि राजनीतिक सुधारों के बिना धार्मिक-सामाजिक सुधार की बात बेमानी एवं एकांगी है।

तथाकथित अभिमानी उच्च वर्ग द्वारा तथा खूंखार हाकिम श्रेणी द्वारा प्रजा को लताड़ने वाली व्यवस्था के खिलाफ गुरु साहिबान एक सशक्त प्रतिरोध और हस्तक्षेप की आवाज सदैव बने रहे। जनसामान्य के दु:ख-दर्द ही उनकी संवेदनाओं के स्वर रहे।

प्रथम गुरु श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी बाणी में सार्वजनिक रूप से वर्णन कर बाबर के हमलों से आहत जनमानस के हक में आवाज बुलंद की, परमात्मा तक को उलाहना देकर। किसी अन्य धर्मवेत्ता ने ऐसा नहीं किया था। श्री गुरु अंगद देव जी, श्री गुरु अमरदास जी तथा श्री गुरु रामदास जी उनके नक्शे-कदमों पर चलते हुए समाज का योग्य नेतृत्व करते रहे। श्री गुरु अरजन देव जी ने शहादत देकर कुंठित मुगल राजनीतिक सत्ता का खुला विरोध किया श्री गुरु नानक देव जी के मिशन को नई ऊंचाइयां देकर। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने संत-सिपाही के अभिनव दर्शन के साथ ही आत्मरक्षा में तेग उठाने का सूत्रपात किया। मानसिक एवं शारीरिक स्वतंत्रा की अभिलाषा रखने वाले लोगों में गुरु जी को 'सच्चा पातशाह' मानना और कहना तभी से रूढ़ हुआ। श्री गुरु हरिराय साहिब हों या श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब, उन्होंने भी पूर्ववर्ती गुरु साहिबान के

**१६६, आवास विकास, सिविल लाइन्स, बरेली फोन : ९९२७०-०३०००*

जीवन-सिद्धांतों पर वीरतापूर्वक पहरा दिया, अन्यायकारी शासक व सामाजिक वर्ग से दूरी बनाए रखी और प्रभु की सत्य-आधारित सत्ता को ही बुलंदियों पर ले जाने का सफल यत्न करते रहे। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने मानवाधिकारों की आजादी की आवाज़ को पंख लगाने का काम किया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की भूमिका तो सर्वख्यात है ही। उन्होंने सपरिवार कुर्बानी देकर 'खालसा पंथ' के रूप में नई चेतना, नई जागृति, नया समाज पैदा कर दिया।

समाज के कुछेक लोग सिक्ख गुरु साहिबान को मुगलों अथवा मुसलमानों के विरोधी बताकर समाज में अराजकता का माहौल सृजित करने की कोशिश में लगे रहते हैं। ऐसे में या तो उनकी जानकारी अधूरी है या वे जानबूझ कर ऐसा करते हैं। चूंकि गुरु साहिबान के काल में भारत की प्रमुख सत्ता पर मुगलों का आधिपत्य था और वे धर्मांध भी थे, अत: गुरु साहिबान द्वारा उनकी खिलाफत करना स्वाभाविक था। दूसरी तरफ उदारवादी मुसलमानों के संग गुरुओं के संबंध सदैव मधुर बने रहे। भाई मरदाना जी और भाई राय बुलार जी, नवाब दौलत ख़ान लोदी, जूनागढ़ का नवाब फैज तलब खान, पानीपत के मशहूर सूफी शाह शरफ, मुल्तान के पीर बहाउद्दीन आदि के साथ श्री गुरु नानक देव जी के अंतरंग संबंध रहे। श्री गुरु अमरदास जी के वक्त हिंदोस्तान का बादशाह अकबर था। वो श्री गुरु अमरदास जी से मिलने गोइंदवाल साहिब आया और 'पहले पंगत पाछै संगत' की नियम बद्धता के चलते आम लोगों के साथ जमीन पर बैठ कर लंगर छका, वो भी जीवन में पहली बार। श्री गुरु रामदास जी के लाहौर के प्रसिद्ध सूफी संत साँई मियां मीर जी के साथ ऐसे मैत्री संबंध विकसित हुए जो श्री गुरु अरजन देव जी तथा श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब तक अबाधित चलते रहे।

श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री हरिमंदर साहिब की आधारशिला रखने हेतु अपने परम मित्र साँई मियां मीर जी को लाहौर से श्री अमृतसर साहिब बुलवाया। श्री गुरु अरजन देव जी के बादशाह अकबर के साथ भी मधुर संबंध बने रहे। उन्होंने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की आदि बीड़ का संपादन किया तो उसमें मुस्लिम संतों की बाणी को भी सम्मिलित किया। शहजादा खुसरो मिर्जा भी श्री गुरु अरजन देव जी का बहुत सम्मान किया करता था।

मशहूर फारसी लेखक मोहसिन फानी सात-आठ वर्ष तक श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का मेहमान बन कर कीरतपुर साहिब में रहा। ईरान के एक प्रसिद्ध सूफी पीर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब से मिलने कीरतपुर साहिब आए थे। शहजादा दाराशिकोह के श्री गुरु हरिराय साहिब के साथ मित्रतापूर्ण संबंध थे। दाराशिकोह का पिता बादशाह शाहजहाँ गुरु-घर के प्रति ईर्ष्या रखता था। उसने श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब पर चार बार आक्रमण कर युद्ध किया था और हर बार पराजय हासिल की। श्री गुरु हरिराय साहिब ने मानव धर्म को सर्वोपरि रखते हुए हमेशा उदारवादी नीति अपनाए रखी।

एक बार जब दाराशिकोह गंभीर रूप से बीमार पड़ा तो श्री गुरु हरिराय साहिब ने उसके लिए औषधि भेजी। वह उसी औषधि से ठीक हुआ। दाराशिकोह तथा औरंगजेब के सत्ता-संघर्ष में श्री गुरु हरिराय साहिब उदारवादी दारा के पक्ष में थे।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब के सैफाबाद के जमींदार सैफुद्दीन के साथ बड़े आत्मीय संबंध थे। सैफुद्दीन के आग्रह पर श्री गुरु तेग बहादर साहिब एक बार चौमासा में उसके मेहमान भी रहे थे और सैफुद्दीन द्वारा भेंट में दिए गए घोड़े से पूरब की यात्रा पर गए थे। कहा जाता है कि श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहीदी की खबर सुन कर सैफुद्दीन ने चालीस दिन तक शोक मनाया था और वो बाद में सिक्ख बन गया था। पीर बुद्धू शाह के साथ श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के अंतरंग संबंध सभी जानते हैं। भंगानी के युद्ध में पीर बुद्दू शाह के पुत्रों, मुरीदों ने गुरु जी का साथ देते हुए शहादत प्राप्त की थी। गुरु जी के दरबार में आश्रय पाए ५२ कवियों में मुस्लिम शायर भी शामिल थे।

उपरोक्त संक्षिप्त विवरण से ज्ञात होता है कि कुछ अल्पज्ञानी लोगों द्वारा सिक्ख गुरु साहिबान को इसलाम-विरोधी बतलाना गलत है। गुरु साहिबान तो सर्वधर्म समभाव के प्रणेता थे। उनके लिए सर्वोपरि धर्म मानव धर्म था। वे किसी धर्म-वर्ग विशेष या व्यक्ति विशेष के विरोधी नहीं, बल्कि जुल्म, अन्याय, धार्मिक भेदभाव, ऊंच-नीच, मानव-वैमनस्य आदि के विरोधी थे। उनके लिए मानव-प्रेम व मानव-सद्भावना का सिद्धांत ही सफल समाज की कुंजी था।

कविता

युगपुरुष श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी

–सरदार हरचरन सिंघ (सूदन)*

धन्य है यह देश जहाँ,
गुरु गोबिंद सिंघ जी प्रकट हुए।
पौष माह में रूहानी नूर,
पटना साहिब चिरपरिचित हुए।
भीखन शाह जी हाज़िर हुए,
देखने हेतु चमत्कार।
भारत की डूबती नैया का,
आ गया एक रक्षक पतवार।
नमन है तुम्हें हमारा सतिगुरु,
सर्व जग में तुम न्यारे!
देश-धर्म की रक्षा हेतु,
अपने चारों प्रिय पुत्र वारे!
रणभूमि में बाबा अजीत सिंघ-जुझार सिंघ ने
न्यौछावर किए प्राण।
जब तक धरती-चाँद रहेगा,
भारतवर्ष करेगा तुम पर मान ।
बाबा जोरावर सिंघ-फतहि सिंघ को,
दीवारों में जिंदा चिनवाया।
गुरुद्वारा फतहिगढ़ साहिब है वहाँ,
जहाँ यह इतिहास रचाया।
पूछ लिया जब गुरु-माताओं ने,
कहाँ चारों पुत्र आलोप किए?
गुरु बोले, धर्म की खातिर मैंने,
चारों पुत्र कुर्बान किए।
बुज़ुर्ग माँ ने ठण्डे बुर्ज में,
शहादत पाई अति महान।
साक्षी है वह पावन स्थल,
जहाँ दिया था बलिदान।
बाल्यकाल में धर्म-रक्षा हेतु,
गुरु-पिता को शहीद करवाया।
चिल्ला उठी थी कायनात,
जमीं का सीना फटने को आया।
सरवंश-त्याग न करते आप तो,
देश का हाल कुछ और ही होता।
हो जाती सुन्नत सबकी और
अधर्म की होती चहुं ओर निशा।
प्रेरक जीवन तुम्हारा पढ़कर,
मिलता है हमको पैगाम।
श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को,
कोटि-कोटि है प्रणाम!

*६९ , वार्ड नं. ११, निकट गुरुद्वारा साहिब, पुरानी रेलवे लाईन, आरएस पुरा , जम्मू – १८११०२, फोन : ९४१९६-२४२७८

'बेगमपुरा' के सृजनकर्ता : भक्त रविदास जी

–डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ*

सर्वहित में धर्म की प्रासंगिकता स्थापित कर समाज को अभिनव आध्यात्मिक दृष्टि प्रदान करने वाले भक्त रविदास जी का मानव सभ्यता के इतिहास में शिरोमणि स्थान है। उन्होंने श्रेष्ठ जीवन मूल्यों के संरक्षण हेतु एक दृढ़ आधार प्रदान किया जिसके लिये मानव समाज उनका सदैव ऋणी रहेगा। काशी जैसे नगर में जहां एक वर्ग विशेष का धर्म-आध्यात्म जगत पर एकाधिकार था, भक्त रविदास जी की भक्ति आकाश पर सूर्य के उदय जैसी थी, जिसने सारे परिदृश्य को ही बदल कर रख दिया। आपकी जन्म-तिथि और वर्ष को लेकर भिन्न-भिन्न विचार हैं। सिक्ख विद्वान भाई कान्ह सिंघ नाभा के अनुसार, भक्त रविदास जी की माता का नाम दिआरा जी तथा पिता का नाम संतोखा जी था। उस समय जब निम्न माने जाने वाले वर्गों पर विभिन्न सामाजिक, धार्मिक प्रतिबंध थे और उच्च माने जाने वाले वर्ग उन्हें हेय दृष्टि से देखते थे, भक्त रविदास जी ने न केवल अपनी जाति पर गर्व की अनुभूति व्यक्त की, धर्म में उच्च जातियों के प्रभुत्व को भी तोड़ा। उनकी भक्ति में परम्परागत जूतियां बनाने का व्यवसाय कभी बाधा नहीं बना, दोनों साथ-साथ चले :

नागर जनां मेरी जाति बिखिआत चंमारं॥
रिदै राम गोबिंद गुन सारं॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १२९३)

यह अत्यंत साहसपूर्ण था। जाति और भक्ति के संबंध की स्थापित मान्यता को अस्वीकार करते हुए भक्त रविदास जी ने कहा कि उनके हृदय में परमात्मा का नाम बसा हुआ है जिससे उनका जीवन निर्मल हो गया है। जाति, वर्ण-भेद मानने वालों को उन्होंने अपने तर्क द्वारा निरुत्तर कर दिया था :

सुरसरी सलल क्रित बारुनी रे संत जन करत नही पानं॥
सुरा अपवित्र नत अवर जल रे सुरसरी मिलत नहि होइ आनं॥१॥
तर तारि अपवित्र करि मानीऐ रे जैसे कागरा करत बीचारं॥
भगति भागउतु लिखीऐ तिह ऊपरे पूजीऐ करि नमसकारं॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १२९३)

गंगा को पवित्र माना जाता है, किन्तु उसके जल से यदि शराब बनाई जाये तो भी 'संत' उसे ग्रहण नहीं करते हैं अर्थात् उच्च जाति, कुल का होने के बावजूद यदि उसमें अवगुण हैं तो उसे निकृष्ट और त्याज्य ही माना जायेगा। इसके विपरीत यदि शराब अथवा अन्य अपवित्र द्रव्य

*ई–१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ – २२६०१७, फोन : ९४१५९६०५३३, ८४१७८५२८९९

गंगा नदी में मिल जायें तो गंगा के जल में मिल कर वे गंगा जैसा ही पवित्र हो जाते हैं। जाति कोई भी हो यदि मन परमात्मा में रम गया है तो वह परमात्मा जैसा ही स्वीकार्य और आदरणीय हो जाता है। भक्त रविदास जी ने दूसरा उदाहरण ताड़ी के पेड़ का दिया, जिसमें ताड़ी जैसा नशा करने वाला पेय पदार्थ निकलने से उसे अपवित्र माना जाता है, उस पेड़ से बने कागज को भी अपवित्र माना जाता है, किन्तु उस कागज पर यदि परमात्मा की स्तुति लिख दी जाये तो वही कागज पूजनीय हो जाता है। वैसे ही परमात्मा की सच्ची भक्ति है जो किसी को भी पूज्य बना देती है। भक्त रविदास जी के साथ भी यही हुआ। काशी ही नहीं, पूरे भारत में अपनी भक्ति और प्रेम-भावना के कारण उनका स्थान पूजनीय हो गया।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भी भक्त रविदास जी की आध्यात्मिक श्रेष्ठता को स्वीकार करते हुए उनकी बाणी को स्थान दिया गया है। श्री गुरु रामदास जी ने उनका विशेष उल्लेख अपनी बाणी में किया है :

रविदासु चमारु उसतति करे हरि कीरति निमख इक गाइ॥

पतित जाति उतमु भइआ चारि वरन पए पगि आइ॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ७३३)

परमात्मा की भक्ति में रमे हुए भक्त रविदास जी की ऐसी प्रतिष्ठा स्थापित हुई कि जाति-वर्ण का विचार किये बिना सभी जातियों, वर्णों के लोग उनके श्रद्धालु बन गये और उनकी शरण प्राप्त करने लगे। भक्त रविदास जी बाल्यावस्था से ही परमात्मा की भक्ति में रम गये थे। किशोर होते-होते उनकी भक्ति-भावना पूरी तरह से परिपक्व और प्रत्यक्ष हो चुकी थी। उनका उदार स्वभाव भी प्रकट होने लगा था। वे निर्धनों की सहायता करते और उनकी जूतियां बनाने के पैसे भी नहीं लेते थे। इसे देख कर उनके पिता को चिंता हुई। उन्हें चिंता हुई कि उनका पुत्र कहीं वैराग्य न धारण कर ले। इससे अप्रभावित भक्त रविदास जी गंगा के किनारे जाकर समाधि लगा कर बैठ जाते और लंबे समय तक ध्यान लगाते। परिवार ने उन्हें सांसारिकता के साथ जोड़ने के लिये शीघ्र ही उनका विवाह करा दिया, ताकि उनके मन में परिवार का मोह पैदा हो जाये। हुआ इसके ठीक विपरीत। भक्त रविदास जी की पत्नी माता लोना देवी अति संतोषी, सहज और शील स्वभाव वाली थीं। भक्त रविदास जी को उनका भी पूर्ण सहयोग प्राप्त होने लगा। भक्त रविदास जी अपना व्यावसायिक कार्य पूरी ईमानदारी परिश्रम से करते और साथ ही मन में परमात्मा का सुमिरन चलता रहता। अपनी सारी कमाई वे लोगों की सहायता हेतु खर्च कर देते और अपना काम समाप्त होने के बाद परमात्मा की भक्ति में लीन हो जाते थे। उनके पिता ने जब स्थिति अपने मन के अनुकूल होती न देखी तो भक्त रविदास जी को जमीन का एक हिस्सा देकर परिवार से अलग कर दिया ताकि उन पर पारिवारिक जिम्मेदारियों

का बोझ पड़ सके और वे सांसारिक मोह में व्यस्त हो सकें। भक्त रविदास जी ने कोई रोष नहीं किया और एक छोटी-सी कुटिया बना कर अपनी पत्नी के साथ रहने लगे। वे जूतियां बनाने का अपना पारम्परिक कार्य भी करते तथा परमात्मा की भक्ति में और अधिक समय देने लगे। उनका तो चित्त ही परमात्मा के सुमिरन में लगता था :

चित सिमरनु करउ नैन अविलोकनो स्रवन बानी सुजसु पूरि राखउ॥

मनु सु मधुकरु करउ चरन हिरदे धरउ रसन अंम्रित राम नाम भाखउ॥१॥

मेरी प्रीति गोबिंद सिउ जिनि घटै॥

मै तउ मोलि महगी लई जीअ सटै॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६९४)

भक्त रविदास जी के उपरोक्त वचन से बोध होता है कि उनकी भक्ति का कैसा रंग था। आपने कहा कि मन में परमात्मा का सुमिरन चल रहा है, नेत्रों में उसका रूप समाया हुआ है, कानों में उसकी महिमा के गीत सदा ध्वनित होकर समा रहे हैं अर्थात् समस्त इन्द्रियां परमात्मा-प्रेम को समर्पित हो गई हैं। आपने कहा कि मन में परमात्मा के चरण बस रहे हैं, मन उनका भंवरा बन गया है। जिह्वा पर सदैव परमात्मा का नाम मुखर हो रहा है। मेरा संकल्प है कि परमात्मा की जो प्रीति मेरे मन में पैदा हुई है वह कभी भी न घटे।

यह प्रीति मैंने बड़ी कीमत चुका कर प्राप्त की है। इसके लिये मैंने अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया है। यह सत्य भी था। भक्त रविदास जी का पूरा जीवन परमात्मा को समर्पित रहा। कोई लोभ, कोई मोह, कोई भय उन्हें उनके इस संकल्प से डिगा नहीं सका। उनकी भक्ति प्रेम और समर्पण की भक्ति थी। इसमें किसी भी कर्मकांड के लिये कोई स्थान नहीं था। भक्त रविदास जी ने अपनी बाणी में स्वयं स्वीकार किया है कि परमात्मा का नाम ही उनकी आरती है, नाम ही उनका तीर्थ-स्नान है, नाम ही उनका पूजा का आसन है, नाम ही चंदन और केसर है, नाम ही दीया है, उसमें पड़ी बाती और तेल है, नाम ही तागा और उसमें गुथे हुए फूलों की माला है; नाम ही अंतर् को प्रकाशित करने वाला है :

नाम तेरे की जोति लगाई भइओ उजिआरो भवन सगलारे॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६९४)

प्रचुर कर्मकांडों के उस दौर में भक्त रविदास जी की मन से की गई भक्ति से पूरी धरती सुशोभित हो रही थी। उन्हें राजकीय आमंत्रण भी मिले फिर भी मन कभी विचलित नहीं हुआ। चित्तौड़ की महारानी झालां आपकी भक्त थी। भक्त रविदास जी उसके विशेष आग्रह पर चित्तौड़ गये भी किन्तु वापिस लौट आये। उनकी आवश्यकताओं को देख कर एक बार किसी ने उन्हें पारस पत्थर दिया। कुछ वर्षों बाद जब वह वापिस लौटा तो भक्त जी की आर्थिक स्थिति में कोई सुधार न देख कर उन्हें पारस पत्थर की याद दिलाई। भक्त रविदास जी ने कहा कि उनके पास इससे अधिक

मूल्यवान वस्तु 'परमात्मा का नाम' है।

दारिदु देखि सभ को हसै ऐसी दसा हमारी॥
असट दसा सिधि कर तलै सभ क्रिपा तुमारी॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ८५८)

संसार तो बाह्य अवस्था देखता है और सांसारिक धन का अभाव देख कर उपहास उड़ाता है। उसे क्या ज्ञान कि जिस पर परमात्मा की कृपा हो जाये, अठारह सिद्धियां उसके वश में आ जाती है! परमात्मा की कृपा से अधिक मूल्यवान संसार में कुछ भी नहीं है। दरिद्रता तब तक है जब तक मन में परमात्मा की भक्ति का भाव नहीं है, उसकी कृपा नहीं है। परमात्मा का नाम, उसकी कृपा से बढ़ कर कोई धन, कोई समृद्धि नहीं है। भक्त रविदास जी का जीवन आत्मिक समृद्धि और वैभव का जीवन था। उन्होंने समाज को जीवन का महत्त्व और उद्देश्य बताया, जिसमें जीवन की सार्थकता निहित थी। इससे अनेक भ्रम टूटे और दुविधायें दूर हुईं। मनुष्य तो बाह्य आडंबरों में पड़ा हुआ है।

करम अकरम बीचारीऐ संका सुनि बेद पुरान॥
संसा सद हिरदै बसै कउनु हिरै अभिमानु॥३॥
बाहरु उदकि पखारीऐ घट भीतरि बिबिधि बिकार॥
सुध कवन पर होइबो सुच कुंचर बिधि बिउहार॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३४६)

मनुष्य बड़े-बड़े धर्म-ग्रंथ पढ़ता है और जान लेता है कि कैसे कर्म करने हैं और कैसे नहीं करने हैं। वह अपनी सारी शंकाओं का निवारण भी धर्म-ग्रंथों से ज्ञान प्राप्त करके कर लेता है, किन्तु फिर भी उसके मन में बैठे हुए विकार दूर नहीं होते हैं। ऐसे ज्ञान का क्या अर्थ है? मनुष्य का बाह्य वेश एक धर्मात्मा का होता है। वह अपने तन की शुचिता पर ध्यान देता है, किन्तु ऐसी शुचिता व्यर्थ है, क्योंकि मन में तो विकारों की मैल भरी हुई है। यह तो वैसा ही है जैसे एक हाथी देर तक नदी में नहाता है किन्तु फिर कीचड़ में जा लोटता है। मनुष्य का उद्धार मन की भक्ति और अंतर् की निर्मलता में है।

भगति जुगति मति सति करी भ्रम बंधन काटि बिकार॥
सोई बसि रसि मन मिले गुन निरगुन एक बिचार॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३४६)

परमात्मा की भक्ति और कृपा से मति में सच का निवास हो जाता है और सारे भ्रम दूर हो जाते हैं, विकार नष्ट हो जाते हैं। परमात्मा मन में बस जाता है और उसकी भक्ति का रस पैदा होने लगता है। निराकार परमात्मा के सर्वव्यापी रूप के दर्शन होने लगते हैं। यह प्राप्ति सरल नहीं है, क्योंकि मनुष्य तो अवगुणों से भरा हुआ है।

म्रिग मीन भ्रिंग पतंग कुंचर एक दोख बिनास॥
पंच दोख असाध जा महि ता की केतक आस॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४८६)

भक्त रविदास जी विलक्षण दृष्टि के स्वामी थे। उन्होंने मनुष्य के दुखों के मर्म पर हाथ रखा। भक्त रविदास जी ने मृग, मछली, भंवरा, पतंगा और

हाथी के उदाहरण दिए। ये सभी किसी न किसी एक दोष से ग्रस्त हैं। मृग की आसक्ति नाद पर है। मछली को जल का मोह है। भँवरे को सुगंध का मोह है। पतंगे को दीपक की लौ से प्रेम है। हाथी में काम प्रधान है। इसी एक अवगुण के कारण इन्हें अपनी जान गंवानी पड़ती है। मनुष्य का क्या हाल होगा जिसके अंदर एक नहीं पांच-पांच दोष हैं— काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार। उसके जीवन में सुख की आशा ही कैसे की जा सकती है! भक्त रविदास जी ने कहा कि अज्ञानता के कारण उसका विवेक मलिन हो गया है और सच की पहचान ही नहीं रही है। मनुष्य के उद्धार का एक ही उपाय है— परमात्मा की कृपा। वह कृपा करता है, क्योंकि उस जैसा दयालु संसार में कोई नहीं है और मनुष्य जैसा दीन कोई नहीं है— *"हम सरि दीनु दइआलु न तुम सरि अब पतीआरु किआ कीजै॥"* यह श्रेष्ठ जीवन-अवस्था का आधार था। भक्त रविदास जी ने जिन दुखों, आशंकाओं से मुक्त 'बेगमपुरा' की कल्पना की थी वह मनुष्य की विनम्रता, दास-भाव और परमात्मा की कृपा से ही सम्भव था। उनका मानना था कि अनेक जन्मों से परमात्मा से बिछड़ा हुआ और आवागमन के चक्र में भटक रहा मनुष्य अपने इस जीवन को पूर्ण रूप से परमात्मा की भक्ति को समर्पित कर दे। वह परमात्मा पर अटूट विश्वास रखे, क्योंकि परमात्मा की महिमा अपार है।

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै॥
गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ११०६)

परमात्मा दीन-दुखी का आसरा है, उसे दुखों से उबारने वाला है। वह अपने सेवक को ऐसा मान-सम्मान देने वाला है, जैसा कोई सोच भी नहीं सकता। परमात्मा की महिमा कोई जान ही नहीं सकता। जिसे सारा संसार अपने निकट भी न आने देता हो, परमात्मा उस पर अपनी कृपा की बारिश कर देता है। जिसे नीच माना जा रहा था परमात्मा उसे ही सर्वश्रेष्ठ बना देता है— *"नीचह ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै॥"* परमात्मा के निर्णय सदैव स्वतंत्र होते हैं। वह किसी दबाव में नहीं, स्वेच्छा से निर्णय लेने वाला है। भक्त रविदास जी के ये वचन किसी के भी मन को आश्वस्त करने वाले हैं और निराशा के अंधकार से निकाल कर आशा की रोशनी से भर देने वाले हैं। गुरु साहिबान की ही भांति भक्त रविदास जी ने भी परमात्मा की कृपा प्राप्त करने के लिये नाम-सुमिरन पर बल दिया है।

मुकंद मुकंद जपहु संसार॥
बिनु मुकंद तनु होइ अउहार॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ८७५)

परमात्मा का नाम जपने में ही जीवन की सार्थकता है। नाम न जपने वाले का जीवन व्यर्थ जाता है। परमात्मा ही मुक्ति का दाता है। वही सच्चा पिता-माता अर्थात् जीवन देने वाला और पालन करने वाला है। भक्त रविदास जी की प्रेरणा थी कि

मनुष्य सारे प्रपंच त्याग कर परमात्मा की भक्ति में मन एकाग्र करे— *"करि बंदिगी छाडि मै मेरा॥"* मनुष्य अपने आप को पूर्ण रूप से परमात्मा को समर्पित कर दे, स्व का भाव ही मिटा दे।

जब हम होते तब तू नाही अब तूही मै नाही॥
अनल अगम जैसे लहरि मइ ओदधि जल केवल जल मांही॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ६५७)

जब मनुष्य स्व के भाव को मिटा देता है तभी मन में परमात्मा की प्रीति, भक्ति प्रकट होती है। स्व के मिट जाने पर केवल परमात्मा का प्रेम ही बचता है। वास्तव में स्व अथवा अहंकार कुछ भी नहीं है, जैसे सागर में वायु के प्रभाव से लहरें उठती हैं और वायु का प्रभाव समाप्त होते ही लहरें सागर का ही जल बन जाती हैं वैसे ही मनुष्य का जीवन है। अहंकार, विकार समाप्त होते ही मनुष्य और परमात्मा की निकटता स्थापित हो जाती है। मनुष्य-जीवात्मा वास्तव में परमात्मा की ही अंश है और अपने अवगुणों के कारण परमात्मा से दूर है। अवगुण समाप्त होते ही जीवात्मा परमात्मा में अभेद हो जाती है, जैसे लहर शांत होते ही सागर में विलीन हो जाती है। भक्त रविदास जी जानते थे कि माया के मोह और विकारों से उबर पाना मनुष्य के लिये अति कठिन है। वह बार-बार भूल कर सकता है, इसलिये उन्होंने परमात्मा से प्रार्थना करने को कहा ताकि परमात्मा उसे अपना जन मान कर सदैव सुमार्ग पर चलाये— *"मोहि न बिसारहु मै जनु तेरा॥"* इस प्रार्थना में एक बालसुलभ भावना थी जो अपने पिता के प्रति होती है। इसने आध्यात्म को अति सरल और सर्वगम्य बना दिया। इस सरल भाव से ही 'बेगमपुरा' की आस का जन्म हुआ :

बेगम पुरा सहर का नाउ॥
दूखु अंदोहु नही तिहि ठाउ॥
नां तसवीस खिराजु न मालु॥
खउफु न खता न तरसु जवालु॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ३४५)

मानव समाज ऐसा हो जिसमें किसी भी दुख, चिंता के लिये कोई स्थान न हो, किसी से कोई भय अथवा बेचैनी न हो, सरकारी वसूली की कोई आशंका न हो। व्यवस्था दोष रहित हो, सहज हो; किसी को किसी भी तरह का अभाव न हो। ऐसा संसार, समाज परमात्मा की कृपा से प्राप्त करने का आनंद ही अलग है। ऐसी व्यवस्था में सभी का कल्याण है— *"ऊहां खैरि सदा मेरे भाई॥"* आज संसार में ऐसी ही व्यवस्था की आवश्यकता है, जिसमें सभी का हित निश्चित हो, किसी के साथ कोई भेदभाव न हो। आवश्यकता है भक्त रविदास जी के 'बेगमपुरा' के भाव के विश्व स्तर पर प्रचार, प्रसार की, उसे धारण करने की।

बड़ा घल्लूघारा : सिक्ख इतिहास का अविस्मरणीय अध्याय

*–स. परमजीत सिंघ 'सुचिंतन'**

भूमिका : सिक्ख इतिहास अनेक संघर्षों, बल एवं आत्मगौरव से भरा हुआ है। सिक्ख पंथ का उदय एक ऐसे आध्यात्मिक सामाजिक आंदोलन के रूप में हुआ, जिसने अन्याय, अत्याचार और धार्मिक दमन के विरुद्ध, संगठित प्रतिरोध की नई परंपरा स्थापित की। सिक्ख इतिहास में 'घल्लूघारा' शब्द सामूहिक नरसंहार और भीषण अत्याचार का प्रतीक है। 'घल्लूघारा' शब्द का अर्थ है— भारी कत्लेआम या सामूहिक नरसंहार। सिक्ख इतिहास में तीन प्रमुख घल्लूघारे हुए हैं— पहला— 'छोटा घल्लूघारा' (सन् १७४६ ई.), दूसरा— 'बड़ा घल्लूघारा' (सन् १७६२ ई.) और तीसरा— जून १९८४ ई. का घल्लूघारा।

बड़ा घल्लूघारा न केवल सिक्ख इतिहास की सबसे दर्दनाक घटनाओं में से एक है बल्कि यह मानव इतिहास में धार्मिक उत्पीड़न और सत्ता के क्रूर चेहरे का ज्वलंत उदाहरण प्रस्तुत करता है। इस घल्लूघारा में हजारों निर्दोष सिक्ख पुरुषों, महिलाओं तथा बच्चों को बड़ी बेरहमी के साथ मौत के घाट उतार दिया गया। बड़ा घल्लूघारा से संबंधित विभिन्न पहलुओं को इस लेख में निम्नानुसार देने का प्रयास किया गया है :—

समकालीन राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियां : अठारहवीं शताब्दी में पंजाब राजनीतिक अस्थिरता और सत्ता-संघर्षों का केंद्र बना हुआ था। मुग़ल साम्राज्य अपने पतन की ओर अग्रसर था। सन् १७०७ ई. में औरंगज़ेब की मृत्यु के बाद, केंद्रीय सत्ता कमजोर हो गई थी, जिसके परिणामस्वरूप प्रांतीय सूबेदारों तथा बाहरी आक्रमणकारियों को मनमानी करने का अवसर मिल गया था।

इसी कालखंड में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा स्थापित सिक्ख पंथ, खालसा पंथ के माध्यम से, एक सशक्त सैन्य धार्मिक शक्ति के रूप में उभर रहा था। सिक्खों ने न केवल धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा की बल्कि सामाजिक न्याय, समानता और आत्मसम्मान के सिद्धांतों को भी अपने व्यवहार में उतारा। यह बात तत्कालीन शासकों और आक्रमणकारियों को असहज करती थी।

अहमद शाह अब्दाली का उदय तथा भारत पर आक्रमण : अहमद शाह अब्दाली, जिसे अहमद शाह दुर्रानी भी कहा जाता है, अफ़ग़ानिस्तान का शक्तिशाली शासक था। उसने सन् १७४७ से १७६९ ई. के दरमियान भारत पर अनेक आक्रमण किए। उसके आक्रमणों का मुख्य उद्देश्य लूटपाट, राजनीतिक प्रभुत्व और इसलामी सत्ता का विस्तार था।

पंजाब उसके लिए राजनीतिक व रणनीतिक

* ७६, फेस-३, अर्बन अस्टेट, दुग्गरी, लुधियाना–१४१०१३, फोन : ९७७९१-२४५००

दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण था। सिक्ख मिसलों की बढ़ती शक्ति और उनकी स्वतंत्र गतिविधियाँ अब्दाली को सीधे चुनौती दे रही थीं। सिक्खों ने कई बार अब्दाली की सेनाओं पर छापामार हमले किए और उसकी आपूर्ति लाइन को बाधित किया। इससे अब्दाली के मन में सिक्खों के प्रति गहरी शत्रुता उत्पन्न हो गई।

सिक्ख मिसलें एवं सामूहिक नेतृत्व : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के बाद सिक्खों ने 'सरबत्त खालसा' और 'मिसल' व्यवस्था के माध्यम से सामूहिक नेतृत्व विकसित किया। यह व्यवस्था पूर्णतया लोकतांत्रिक थी और विकेंद्रीकरण का जीता-जागता उदाहरण थी। सिक्ख योद्धा छोटे छोटे जत्थों में संगठित होकर, अत्याचारी शासकों के विरुद्ध संघर्ष करते थे। मिसलों की यह स्वतंत्रता और संगठन-क्षमता अहमद शाह अब्दाली के लिए असहनीय थी। वह सिक्खों को स्थायी रूप से समाप्त करना चाहता था, ताकि पंजाब पर उसका 'एक छत्र राज्य' स्थापित हो सके।

बड़ा घल्लूघारा के कारण : बड़ा घल्लूघारा के पीछे कई तत्कालीन तथा दीर्घकालीन कारण थे, जैसे कि—

१. सिक्खों की बढ़ती सैन्य-शक्ति : सिक्ख आत्म-रक्षा के लिए अपनी सैन्य-शक्ति लगातार बढ़ा रहे थे। इस मज़बूत सैन्य-शक्ति के कारण, सिक्खों ने मुग़ल तथा अफ़ग़ान सेनाओं को कई बार पराजित किया था, जिससे अब्दाली की प्रतिष्ठा को ठेस पहुँची थी। अब्दाली इस अपमान का बदला लेने के लिए आतुर था।

२. अब्दाली की धार्मिक असहिष्णुता : अब्दाली को धार्मिक कट्टरता के कारण, सिक्खों की स्वतंत्र धार्मिक पहचान और खालसा परंपरा पसन्द नहीं थी। वह चाहता था कि सभी लोग इसलाम धर्म अपना लें और इसलाम के अलावा किसी अन्य धर्म का अस्तित्व ही न रहे।

३. राजनीतिक नियंत्रण की लालसा : अब्दाली पंजाब पर पूर्ण नियंत्रण करना चाहता था। उसे यह भी लगता था कि सिक्खों का विनाश किए बिना पंजाब जीतना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव भी है, इसलिए वह किसी भी तरह सिक्खों को ख़त्म कर देना चाहता था।

बड़ा घल्लूघारा की घटना (५ फ़रवरी, सन् १७६२ ई.) : सन् १७६२ ई. की सर्दियों में सिक्ख जत्थे बड़ी संख्या में अपने परिवारों सहित मालवा क्षेत्र की ओर बढ़ रहे थे। इन जत्थों में बहुत-से निहत्थे बच्चे, महिलाएं एवं वृद्ध शामिल थे। किसी को भी यह अनुमान नहीं था कि अहमद शाह अब्दाली अपनी विशाल सेना के साथ उन पर अचानक हमला कर देगा।

कुप्प रुहीड़ा क्षेत्र (निकट मलेरकोटला) में अब्दाली की सेना ने सिक्खों को चारों ओर से घेर लिया। भारी हथियारों से लैस अफ़ग़ान सैनिकों ने तलवारों, भालों और बंदूकों से निर्दोष लोगों पर अंधाधुंध हमला कर दिया। यह कोई सैनिक संघर्ष नहीं था बल्कि यह निर्दोष सिक्खों का भीषण संहार था।

इतिहासकारों के अनुसार, इस नरसंहार में ३५

हज़ार से भी अधिक सिक्ख पुरुष, महिलाएं व बच्चे शहीद हो गए। कुछ स्रोत यह संख्या ४० हज़ार से भी अधिक बताते हैं। इसमें महिलाओं और बच्चों को विशेष रूप से निशाना बनाया गया। यह दृश्य इतना भयावह था कि धरती खून से लथपथ हो गई थी। इस घल्लूघारा में सिक्ख स्त्रियों की भूमिका भी बेमिसाल थी। वे केवल पीड़िता नहीं थीं बल्कि संघर्ष की सहभागी थीं। उन्होंने धैर्य व साहस का परिचय देते हुए, ऐसे माहौल में बच्चों को बचाने व घायलों की सेवा करने जैसे अद्भुत कार्य किए। यह घटना सिक्ख समाज में स्त्री-पुरुष समानता के सिद्धांत को और अधिक सुदृढ़ करती है।

अहमद शाह अब्दाली द्वारा किए गए इस सुनियोजित नृशंस हत्याकांड के बाद, बचेखुचे सिक्ख बरनाला जिले के कुतबा व बहमनीआ गांव की ओर चले गए। रात के समय इन सिक्खों ने इक्कठे होकर नियमानुसार 'सोदरु' का पाठ किया तथा अकाल पुरख के समक्ष अरदास की। आश्चर्य की बात यह रही कि इस नृशंस हत्याकांड में बड़ी संख्या में अपने नजदीकी सगे-संबंधियों व रिश्तेदारों के शहीद होने पर भी, सब सिक्खों ने अकाल पुरख का शुक्राना करते हुए यह अरदास की कि हे वाहिगुरु जी ! आपके हुक्म में चार पहर दिन, चढ़दी कला में रहते हुए व्यतीत हुआ है, अब आपके हुक्म में चार पहर रात आई है, वो भी नई सफलता की आशा में व्यतीत करवानी। धैर्य एवं संयम का यह एक अनूठा उदाहरण था, जब ऐसी विकट परिस्थितियां होने पर भी, बाकी बचे हुए सिक्खों ने अकाल पुरख का शुक्राना अदा किया। ऐसा कोई दूसरा उदाहरण किसी अन्य समाज में नहीं मिलता।

धार्मिक स्थानों पर आक्रमण : बड़ा घल्लूघारा के बाद अहमद शाह अब्दाली ने श्री अमृतसर साहिब पर भी हमला किया और श्री हरिमंदर साहिब की संरचना को भी अपवित्र किया। यह सिक्खों की धार्मिक भावनाओं पर गहरा आघात था, किंतु यह आघात भी सिक्खों का आत्मबल तोड़ने में नाकाम रहा।

बड़ा घल्लूघारा के दीर्घकालीन प्रभाव

१. सिक्खों का पुनः संगठित होना : अहमद शाह अब्दाली को लगता था कि इस नरसंहार के बाद, सिक्ख शक्ति ख़त्म हो जाएगी और अब सिक्ख दोबारा उठ नहीं पाएंगे, लेकिन वो यह नहीं जानता था कि जिस धर्म की बुनियाद स्वयं श्री गुरु नानक देव जी ने रखी हो और जिसे विभिन्न गुरु साहिबान ने आध्यात्मिक व शारीरिक रूप से बलशाली बनाया हो, उस धर्म के अनुयायियों को कौन हरा सकता है! इतने बड़े नरसंहार के बावजूद सिक्खों ने हार नहीं मानी। कुछ ही वर्षों में सिक्खों ने पुनः संगठित होकर पंजाब में फिर से अपनी शक्ति स्थापित कर ली। यह सिक्ख इतिहास का अद्वितीय उदाहरण है कि किस प्रकार सिक्खों ने इतने बड़े नरसंहार के बाद, अपने आप को फिर से स्थापित किया। कालान्तर में भी चाहे वह सन् १९४७ ई. का मंजर हो या फिर जून व नवंबर सन् १९८४ ई. का सिक्ख कत्लेआम, सिक्खों को शासन द्वारा प्रायोजित इसी तरह के नरसंहार का

सामना करना पड़ा, लेकिन सिक्खों ने अपने अद्वितीय साहस का परिचय देते हुए, बहुत बड़ा नुकसान होने के बावजूद, सभी विकट परिस्थितियों का सामना करते हुए, अपने आप को पुनः स्थापित किया। सिक्ख इतिहास की चढ़दी कला रूपी यह विचित्र विशेषता, मानवता के इतिहास में कहीं और नहीं मिलती।

२. सरबत्त खालसा और सामूहिक चेतना का विकास : बड़ा घल्लूघारा के पश्चात सिक्खों में सरबत्त खालसा की परंपरा और अधिक सुदृढ़ हुई। श्री अमृतसर साहिब में आयोजित इस सभा में सामूहिक निर्णय लिए जाते थे। यह व्यवस्था आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रारंभिक रूप कही जा सकती है। घल्लूघारा के अनुभव ने सिक्खों को यह सिखाया कि केवल सैन्य-शक्ति ही नहीं, बल्कि संगठन, अनुशासन और आपसी सहयोग भी उतना ही आवश्यक है। इस घटना से सिक्ख एकता का सुदृढ़ीकरण करने में बहुत मदद मिली।

३. धार्मिक पहचान का और अधिक प्रखर होना : बड़ा घल्लूघारा के बाद, सिक्खों की धार्मिक पहचान और अधिक मुखर होकर सामने आई। इस घल्लूघारा के दौरान तथा बाद के समय में सिक्खों के धैर्य एवं साहस ने आम लोगों को बहुत प्रभावित किया।

३. राजनीतिक चेतना का विकास : बड़ा घल्लूघारा का सिक्खों पर एक प्रभाव यह भी पड़ा कि सिक्खों के अंदर राजनीतिक चेतना का फिर से विकास हुआ और इसी राजनीतिक चेतना के कारण, महाराजा रणजीत सिंघ के उदय की पृष्ठभूमि तैयार हुई। इतिहासकार मानते हैं कि यदि बड़ा घल्लूघारा जैसी त्रासदी न हुई होती तो शायद सिक्ख राजनीतिक चेतना इतनी प्रखर न हुई होती। इस घटना ने भविष्य के सिक्ख शासकों को यह सिखाया कि केवल साहस ही नहीं, स्थायी शासन के लिए प्रशासनिक दृष्टि भी आवश्यक है। महाराजा रणजीत सिंघ द्वारा स्थापित सिक्ख साम्राज्य इसी चेतना का प्रतिफल था।

४. ऐतिहासिक और नैतिक मूल्यांकन : बड़ा घल्लूघारा केवल सिक्ख इतिहास की ही नहीं अपितु मानवता के इतिहास की ऐसी घटना है, जिसे मानवाधिकारों का उल्लंघन और धार्मिक असहिष्णुता का प्रतीक कहा जाता है। यह हमें सिखाता है कि सत्ता की क्रूरता कितनी अमानवीय हो सकती है; और यह भी कि आस्था, साहस व एकता के बल पर किसी भी समुदाय को समाप्त नहीं किया जा सकता।

५. सिक्ख ऐतिहासिक स्त्रोतों में बड़ा घल्लूघारा : बड़ा घल्लूघारा का वर्णन सिक्ख ऐतिहासिक ग्रंथों, जनश्रुतियों तथा फ़ारसी स्त्रोतों में मिलता है। प्राचीन पंथ प्रकाश, गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, तवारीख़-ए-अहमदशाही तथा विभिन्न रहितनामों में इस घटना का मार्मिक उल्लेख है। सिक्ख इतिहासकार इस घटना को केवल सैन्य पराजय नहीं बल्कि नैतिक विजय के रूप में देखते हैं। फ़ारसी इतिहासकार भी स्वीकार करते हैं कि अब्दाली की विजय अस्थायी थी क्योंकि उसके द्वारा सिक्खों की आत्मा को पराजित नहीं किया जा सका। यही कारण है कि कुछ ही वर्षों में सिक्ख-

शक्ति पहले से अधिक संगठित होकर उभरी।

आज भी सिक्ख अरदास में बड़ा घल्लूघारा के शहीदों का स्मरण किया जाता है। पंजाब की लोकगाथाओं, वारों एवं ढाडी-गायन में इस त्रासदी का जीवंत चित्रण मिलता है। यह सिक्खों को उनके इतिहास के साथ जोड़ती है और आने वाली पीढ़ियों में शहादत व साहस के संस्कार भरती है।

उपसंहार : बड़ा घल्लूघारा सिक्ख इतिहास का ऐसा अध्याय है जिसे याद करना पीड़ादायक है, किंतु आवश्यक भी। यह शहादत, संघर्ष और पुनर्जागरण की कथा है। सिक्ख दर्शन में शहादत को दु:ख नहीं बल्कि धर्म व मानवता की रक्षा का सर्वोच्च साधन माना गया है। श्री गुरु अरजन देव जी तथा श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहादत की परंपरा, बड़ा घल्लूघारा में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। बड़ा घल्लूघारा में शहीद हुए सिक्खों को पीड़ित की तरह नहीं बल्कि धर्म-योद्धा के रूप में स्मरण किया जाता है। सिक्ख समुदाय ने इस त्रासदी को अपनी कमजोरी नहीं बल्कि अपनी शक्ति बनाया। आज भी यह घटना मानवता को यह संदेश देती है कि अत्याचार चाहे कितना ही भयावह क्यों न हो, अंतत: सत्य और साहस विजयी होते हैं।

बड़ा घल्लूघारा एक शाश्वत स्मृति, एक प्रेरणा और एक अद्वितीय घटना के रूप में, न केवल सिक्ख चेतना में बल्कि समूची मानवता की चेतना में अमर है। बड़ा घल्लूघारा सिक्ख इतिहास का सबसे करुण किंतु सबसे प्रेरणादायक अध्याय है। यह केवल अतीत की स्मृति नहीं बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए मार्गदर्शन है। सिक्खों ने इस त्रासदी से यह सिद्ध किया कि शहादत व्यर्थ नहीं जाती।

आज भी यह घटना हमें यह सिखाती है कि अन्याय के सामने झुकना विकल्प नहीं है और मानव-गरिमा की रक्षा के लिए संघर्ष करना ही सच्चा धर्म है। इस प्रकार बड़ा घल्लूघारा इतिहास की एक घटना नहीं बल्कि मानवता के विवेक की कसौटी है। आधुनिक मानवाधिकार के मानदंडों पर बड़ा घल्लूघारा एक जघन्य अपराध के रूप में देखा जाता है। निर्दोष नागरिकों, महिलाओं और बच्चों का संहार किसी भी युग में अमानवीय ही होता है।

यह घटना विश्व इतिहास के अन्य नरसंहारों के समकक्ष होते हुए, हमें धार्मिक सहिष्णुता का महत्व समझाती है। आज के समय में बड़ा घल्लूघारा का अध्ययन केवल इतिहास जानने के लिए नहीं बल्कि सामाजिक समरसता और धार्मिक सहअस्तित्व को समझने के लिए आवश्यक है। यह हमें चेतावनी देता है कि जब सत्ता अहंकार और कट्टरता से संचालित होती है तो परिणाम विनाशकारी होते हैं। आज के आधुनिक समाज को इतिहास के झरोखों में झांकते हुए, ऐसी घटनाओं को सदैव अपने स्मृति-पटल पर जीवित रखना चाहिए, ताकि हमारा समाज धार्मिक सहिष्णुता के साथ, निर्भय होकर आगे बढ़ता हुआ, आध्यात्मिक, सामाजिक व आर्थिक विकास के पथ पर अग्रसर हो सके।

गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब का प्रबंध संभालने में सरदार तेजा सिंघ समुंदरी की भूमिका

*–डॉ. हरप्रीत कौर**

श्री ननकाणा साहिब वह पवित्र धरती है जहाँ श्री गुरु नानक देव जी का प्रकाश (जन्म) हुआ था। वर्तमान समय में यह स्थान पाकिस्तान में सुशोभित है। इस स्थान पर फरवरी, १९२१ ई. में एक साका घटित हुआ था, जिसे सिक्ख इतिहास में 'साका ननकाणा साहिब' नाम के साथ याद किया जाता है। भाई कान्ह सिंघ नाभा के 'महान कोश' के अनुसार 'साका' शब्द से तात्पर्य है— "कोई ऐसा कर्म (घटना) जो इतिहास में प्रसिद्ध रहने लायक हो।"[९] श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहादत को भी 'साका' शब्द के साथ याद किया गया है। इस सम्बंध में 'बचित्र नाटक' में भी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी फरमान करते हैं :

धरम हेति साका जिनि कीआ ॥
सीसु दीआ पर सिररु न दीआ ॥१४ ॥५ ॥

सिक्खों द्वारा महंतों से गुरुद्वारा साहिबान का प्रबंध छुड़ा कर सिक्ख पंथ के अधीन लाने में काफ़ी जद्दोजहद की गई। इस दौरान कई घटनाएँ घटीं, जिनमें सिक्खों ने शहादत प्राप्त की। हस्तगत लेख का उद्देश्य सरदार स. तेजा सिंघ समुंदरी द्वारा गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब को महंतों से आज़ाद करवाने के लिए निभाई गई भूमिका से सम्बन्धित संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना है।

गुरुद्वारा जन्म-स्थान श्री गुरु नानक देव जी श्री ननकाणा साहिब की सीमा में महंतों द्वारा कई कुकर्म किये जा रहे थे। जब नारायण दास महंत बना तो उसने पूर्व महंत की भाँति गलत काम न करने का इकबाल किया, मगर कुछ समय के बाद नारायण दास भी गलत काम करने लगा। उसने व्यभिचार की सारी हदें पार कर दी थीं, जिसमें १९१७ ई. में वेश्यायों का नाच करवाना, गुरुद्वारा साहिब की मर्यादा को कलंकित करने वाली बेहूदा हरकत भी शामिल थी। इसी तरह लायलपुर से गुरुद्वारा साहिब के दर्शन करने आई छ: महिलाओं की रात में गुरुद्वारा साहिब में आबरू लूटी गई। इसके अलावा सिंध के एक रिटायर्ड सेशन जज की १२-१३ वर्षीय बेटी की 'सोदरु' बाणी के पाठ के समय इज्जत लूटी गई। इस तरह की शर्मनाक घटनाएँ गुरुद्वारा जन्म-स्थान में घटनी शुरू हो गई थीं, जिस कारण इस पवित्र स्थान को महंतों से आज़ाद करवाना बेहद ज़रूरी था। अक्तूबर १९२० ई. में गाँव धारोवाली,

* *रिसर्च स्कालर, सिक्ख इतिहास रिसर्च बोर्ड, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब। फोन : ९६४६७-८५९९८*

ज़िला शेखूपुरा में दीवान आयोजित कर गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब के प्रबंध को सुधारने के लिए गुरमता पारित किया गया।[२] इसी सम्बन्ध में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा २४ जनवरी, १९२१ ई. को एक मीटिंग रखी गई। मीटिंग में ५, ६ और ७ मार्च १९२१ ई. को गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब में आयोजित किये जाने वाले दीवान में महंत को अपनी आदतें सुधारने की ताकीद करने का फ़ैसला किया गया। संगत के लिए लंगर आदि का प्रबंध करने के लिए ६ फरवरी को बनाई गई पाँच सदस्यीय कमेटी में भाई लछमण सिंघ धारोवाली, स. दलीप सिंघ सांगला, स. तेजा सिंघ समुंदरी, स. करतार सिंघ झब्बर और स. बखशीश सिंघ को शामिल किया गया।[३] गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब के महंत द्वारा समझौते की तजवीज़ पेश करने पर बातचीत को आगे बढ़ाने के लिए एक अन्य कमेटी का गठन किया गया, जिसके पाँच सदस्यों में बाबा केहर सिंघ पट्टी, प्रो. जोध सिंघ खालसा कॉलेज श्री अमृतसर साहिब, स. बूटा सिंघ वकील शेखूपुरा, स. करतार सिंघ झब्बर के अलावा स. तेजा सिंघ समुंदरी भी शामिल थे।[४] इस तरह दोनों कमेटीयों में स. तेजा सिंघ समुंदरी को नामज़द किया गया। इस कमेटी द्वारा महंत के साथ विचार-विमर्श करने के लिए फरवरी १९२१ ई. में उसे गुरुद्वारा साहिब खरा सौदा में बुलाया गया, लेकिन महंत वहाँ पर न पहुँचा। महंत ने अपनी जगह दूसरों को भेज कर गुरुद्वारा साहिब खरा सौदा मिलने की बजाय किसी अन्य शहर में मिलने का संदेश भेजा। महंत ने शेखूपुरा में मुलाकात करने का फ़ैसला किया, लेकिन वो वहाँ पर भी न आया और स. बूटा सिंघ शेखूपुरा तथा स. करतार सिंघ झब्बर से लाहौर में मिलने का संदेश भेजा। महंत यहाँ पर भी न पहुँचा और न ही किसी के द्वारा अपने न पहुँचने का संदेश भेजा। स. करतार सिंघ झब्बर और स. बूटा सिंघ को जब महंत की गलत नीयत का पता चला तो वे बहुत क्रोधित हुए।[५]

१७ फरवरी को श्री गुरु सिंघ सभा लायलपुर के गुरुद्वारा साहिब में गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब जत्था ले जाने के बारे में विचार किया गया। भाई लछमण सिंघ द्वारा जत्था तैयार करना शुरू कर दिया गया। ज्ञानी प्रताप सिंघ के अनुसार पूरी तहरीक को भाई लछमण सिंघ, स. तेजा सिंघ समुंदरी, मास्टर तारा सिंघ, भाई करतार सिंघ झब्बर, स. तेजा सिंघ चूहड़काणा, स. सुच्चा सिंघ जैचक, भाई बूटा सिंघ चक्क नंबर २०४ तथा स. राजा सिंघ जड़ाँवाला चला रहे थे।[६] इससे पता चलता है कि स. तेजा सिंघ समुंदरी गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब को पंथक प्रबंध-व्यवस्था में लाने के लिए योगदान डालने वाले प्रमुख नेताओं में से एक थे।

महंत द्वारा गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब में १९-२० फरवरी को एक कान्फ्रेंस रखी गई थी, जिसे ध्यान में रखते हुए स. करतार सिंघ झब्बर के जत्थे द्वारा मार्च के जलसे से पूर्व महंत की अनुपस्थिति में गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब पर कब्ज़ा करने का फ़ैसला किया गया, परन्तु शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा इसे स्वीकृति न दी गई।[७] अकाली नेताओं को महंत के गलत इरादों का पता चलने पर कोशिश की गई कि मार्च के दीवान से पूर्व कोई जत्था गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब न पहुँचे। महंत की साजिशों का पता चलने पर स. करतार सिंघ झब्बर ने भाई लछमण सिंघ धारोवाली तथा भाई बूटा सिंघ लायलपुर के साथ परामर्श कर १९ फरवरी को भाई बूटा सिंघ को प्रात:काल गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब पहुँचने और साथ ही भाई लछमण सिंघ धारोवाली को अपना जत्था लेकर शामिल होने की ताकीद की। इस बात की सूचना मिलते ही स. हरचंद सिंघ, स. तेजा सिंघ समुंदरी तथा मास्टर तारा सिंघ १९ फरवरी को 'अकाली अख़बार' के कार्यालय में लाहौर पहुँचे। यहाँ मीटिंग में स. सरदूल सिंघ कवीशर, मास्टर सुंदर सिंघ लायलपुरी, स. जसवंत सिंघ झबाल और भाई दलीप सिंघ सांगला ने शिरकत की, जिसमें तयशुदा तारीख से पहले गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब में जत्थों को रोकने का फ़ैसला लिया गया।[८]

मास्टर तारा सिंघ की आत्म-कथा से पता चलता है कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की मीटिंग से एक दिन पहले स. तेजा सिंघ समुंदरी मास्टर तारा सिंघ के पास गए। मुलाकात के दौरान उन्होंने भाई लछमण सिंघ धारोवाली द्वारा ज़िला लायलपुर में से अकालियों को इकठ्ठा करने के बारे में बताया। सरदार तेजा सिंघ समुंदरी को चिंता थी कि कहीं कोई घटना न घटित हो जाये।[९] स. तेजा सिंघ समुंदरी और मास्टर तारा सिंघ शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की सभा में शामिल होने के लिए श्री अमृतसर साहिब पहुँचे। इन्हें तुरंत गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब की तरफल जाने वाले जत्थों को रोके जाने की ताकीद की गई। स. तेजा सिंघ समुंदरी और मास्टर तारा सिंघ ने लायलपुर से स. करतार सिंघ झब्बर को प्रात:काल पाँच बजे चूहड़काणा स्टेशन पर मुलाकात से सम्बन्धित तार भेजी। स. करतार सिंघ झब्बर को इस बात पर शक हुआ कि वे हमें गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब जाने से रोकना चाहते हैं, इसी कारण उन्होंने भाई सुच्चा सिंघ को सूचना प्राप्त करने के लिए भेज दिया। स. तेजा सिंघ समुंदरी और मास्टर तारा सिंघ ने भी उसे संदेश दिया कि वह स. करतार सिंघ झब्बर को गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब जत्था ले जाने से रोक ले। भाई दलीप

सिंघ और भाई जसवंत सिंघ ने भी स. करतार सिंघ झब्बर को सूचित किया कि हमें कमेटी ने आपको रोकने के लिए भेजा है, मगर सरदार झब्बर ने कहा कि आपको कमेटी ने नहीं भेजा है। उन्होंने यह भी बताया कि हमें पंथक नेतायों— स. तेजा सिंघ समुंदरी, मास्टर तारा सिंघ, स. अमर सिंघ झबाल, स. सरदूल सिंघ कवीशर आदि ने भेजा है। सरदार करतार सिंघ झब्बर ने कहा कि अब गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब जाने के लिए हम तैयार हैं। इसके बाद भाई दलीप सिंघ को भी जत्थों को रोकने की ज़िम्मेदारी दी गई।[१०]

स. तेजा सिंघ समुंदरी और मास्टर तारा सिंघ ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की सभा में जाकर सूचित किया कि हमने जत्थों को गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब जाने से रोकने के प्रबंध तो किए हैं, मगर शायद वे न रुकें। भाई लछमण सिंघ को जब भाई वरियाम सिंघ के माध्यम से जत्थे को रोकने वाला पत्र मिला तो उन्होंने जत्थे को वापिस लौटने के लिए कहा।[११] भाई टहिल सिंघ ने श्री गुरु हरिराय साहिब का प्रकाश दिवस होने के कारण गुरुद्वारा साहिब के दर्शन करने की बात कही। इसके पश्चात् भाई लछमण सिंघ सहित जत्थे ने भाई टहिल सिंघ के कथनानुसार गुरुद्वारा साहिब पर कब्ज़ा करना छोड़ कर केवल दर्शन करने के लिए जाना उचित समझा। लगभग छ: बजे वे गुरुद्वारा साहिब पहुँच गए। भाई लछमण सिंघ श्री गुरु ग्रंथ साहिब की ताबिया बैठे थे। जत्थे ने कीर्तन करना शुरू कर दिया। दूसरी तरफ़ महंत ने कत्ल-ए-आम की तैयारी के लिए तेल के पीपे, टकुए, गंडासे तथा बंदूकों का प्रबंध कर रखा था। महंत ने योजनानुसार जत्थे पर हमला कर दिया। भाई लछमण सिंघ धारोवाली पर भी गोलियाँ चलाई गईं और उन्हें जिंदा जंड के वृक्ष के साथ बांध कर शहीद कर दिया गया। भाई दलीप सिंघ के शरीर के टुकड़े कर ईंटों की भट्टी में फेंक कर शहीद कर दिया। इसके अलावा और भी कई सिंघों ने शहादत प्राप्त की। समयानुसार स. तेजा सिंघ समुंदरी, मास्टर तारा सिंघ और बाबा किहर सिंघ पट्टी जत्थों को रोकने के लिए रेलगाड़ी द्वारा रवाना हुए, मगर उन्हें मल्लियां जंक्शन पर ही गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब में घटित घटनाक्रम के बारे में पता चल गया। साके के बाद स. करतार सिंघ झब्बर ने जत्थों सहित गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब पहुँच कर काफ़ी जद्दोजहद करने के बाद चाबियाँ कमिशनर से प्राप्त कीं। कमिशनर ने गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब की कमेटी बनाने के पश्चात् कब्ज़ा देने की बात कही। कमिशनर के साथ ६ सिक्ख नेता तथा ९ अन्य सिक्ख नेता गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब पहुँचे। इन नेताओं में स. हरबंस सिंघ

अटारी, स. सुंदर सिंघ रामगढ़िया, मास्टर तारा सिंघ, बाबा किहर सिंघ पट्टी, सरदार बहादर महिताब सिंघ, प्रो. जोध सिंघ के अलावा स. तेजा सिंघ समुंदरी शामिल थे।[१२] मिस्टर किंग कमिशनर लाहौर ने गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब का अधिकार कमेटी के सुपुर्द कर दिया। गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब का प्रबंध पंथक-व्यवस्था में आने के पश्चात शेष गुरुद्वारा साहिबान के प्रबंध के लिए गठित सब-कमेटी में स. तेजा सिंघ समुंदरी, स. तेजा सिंघ चूहड़काणा, स. अमर सिंघ झबाल आदि को शामिल किया गया, जबकि ज़्यादा ज़िम्मेदारी समुंदरी जी के हाथों में आ गई।[१३]

स. तेजा सिंघ समुंदरी द्वारा अपने साथियों सहित गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब में घटित घटनाक्रम को रोकने की कोशिशें की गईं, इसके बावजूद भी साका घटित हो गया। भाई लछमण सिंघ धारोवाली जैसे अनेक सिंघों की शहादत के बाद गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब का प्रबंध पंथक देख-रेख में आया। इस दौरान स. तेजा सिंघ समुंदरी द्वारा निभाई गई भूमिका के कारण सिक्ख पंथ में उन्हें हमेशा याद किया जाता रहेगा।

संदर्भ-सूची :

१. भाई कान्ह सिंघ नाभा, महान कोश, भाषा विभाग पंजाब, २००६, पृष्ठ १७९

२. स. प्रताप सिंघ, गुरुद्वारा सुधार अर्थात् अकाली लहर, खालसा ब्रादर्स, श्री अमृतसर साहिब, १९८३, पृष्ठ ११६-१७.

३. स. सोहन सिंघ जोश, अकाली मोरचिआं दा इतिहास, आरसी पब्लिशर्स, दिल्ली, २०००, पृष्ठ ८४-८५.

४. स. करतार सिंघ झब्बर, अकाली मोर्चे ते झब्बर, नेशनल बुक शाप, दिल्ली, १९६७, पृष्ठ १०६.

५. स. सोहन सिंघ जोश, अकाली मोरचिआं दा इतिहास, पृष्ठ ८५.

६. स. प्रताप सिंघ, गुरुद्वारा सुधार अर्थात् अकाली लहर, पृष्ठ ११७.

७. स. सोहन सिंघ जोश, अकाली मोरचिआं दा इतिहास, पृष्ठ ८७.

८. उक्त, पृष्ठ ८६.

९. मास्टर तारा सिंघ, मेरी याद, सिक्ख रिलीजस बुक सोसायटी, श्री अमृतसर साहिब, तिथिहीन, पृष्ठ ५३.

१०. स. करतार सिंघ झब्बर, अकाली मोर्चे ते झब्बर, पृष्ठ ११२-११३.

११. उक्त, पृष्ठ ११४.

१२. स. हरजिंदर सिंघ दिलगीर, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी किवें बनी? सिक्ख इतिहास रिसर्च बोर्ड, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब, २०००. पृष्ठ ३९.

१३. स. प्यार सिंघ, तेजा सिंघ समुंदरी, गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी, श्री अमृतसर साहिब, १९७५, पृष्ठ ५७.

अकाली मोर्चों में जैतो के मोर्चे का स्थान

*–प्रो. हरभिंदर सिंघ**

१९वीं सदी के आखिर तथा २०वीं सदी के आरंभ के दौरान अंग्रेज़ों की जब्र- ज़ुल्म की नीति के विरुद्ध भारतीय समाज को पुनर्जागृत करने के लिए सिंघ सभा, ग़दर, अकाली, नौजवान भारत सभा आदि कई लहरों ने जन्म लिया। इन लहरों में से अकाली लहर अपना पृथक स्थान रखती है, जिसकी शुरूआत २०वीं सदी के प्रथम दशक के दौरान गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब के मोर्चे के साथ हो गई थी। गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब, दिल्ली में श्री गुरु तेग बहादर साहिब से सम्बन्धित महान स्थान है। जब अंग्रेज़ों ने १९११ ई. में कलकत्ता की जगह दिल्ली को अपनी राजधानी बनाया तो उन्होंने १९१४ ई. के आरंभ में गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब की ज़मीन में से एक सड़क निकाल कर वाइसराय के निवास-स्थान तक बना दी। इस सड़क को पूरा करने के लिए उन्होंने गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब की दीवार का कुछ हिस्सा भी गिरा दिया। इस कारण सिक्खों में अंग्रेज़ सरकार के विरुद्ध आक्रोश बढ़ गया। इसी समय के दौरान 'प्रथम विश्व युद्ध' शुरू हो गया, जिस कारण सिक्खों ने यह काम कुछ समय के लिए स्थगित कर दिया।

'प्रथम विश्व युद्ध' की समाप्ति के बाद सिक्खों ने इस दीवार के निर्माण के लिए सरकार से विनती की। सरकार के टालमटोल करने पर १ दिसंबर, १९२० ई. को दीवार के पुनर्निर्माण के लिए १०० अकालियों का एक शहीदी जत्था भेजने का फ़ैसला किया गया। सरकार की जल्द ही आँखें खुल गईं और उसने दीवार का पुनर्निर्माण करा दिया। इस प्रकार इस पहली विजय के साथ ही फतह के नारे गूँज उठे और अगले मोर्चों के लिए मैदान तैयार हो गया।

इसके बाद २५ जनवरी, १९२१ ई. को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने भाई तेजा सिंघ भुच्चर के नेतृत्व में ४० अकालियों का एक शहीदी जत्था गुरुद्वारा श्री तरनतारन साहिब को दुष्ट व दुराचारी महंत से आज़ाद करवाने के लिए भेजा। महंत ने शांतमयी अकालियों पर अपने गुंडों द्वारा हमला करवाया, जिसमें भाई हज़ारा सिंघ तथा भाई हुकम सिंघ— दो सिंघ शहीद हो गए तथा १७ अन्य घायल हो गए। सिंघों के इस लासानी जज़्बे ने महंत को भागने के लिए विवश कर दिया और गुरुद्वारा श्री तरनतारन साहिब पंथक व्यवस्था के अधिकार में आ गया। इसके बाद २० फरवरी, १९२० ई. को भाई लछमण सिंघ के अधीन एक जत्था गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब की तरफ बढ़ा, ताकि गुरुद्वारा श्री ननकाणा

* *प्रमुख एवं असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, माता गुजरी कॉलेज, फ़तिहगढ़ साहिब। फोन : ९४१७१-४३००३*

साहिब को दुष्ट महंत नारायण दास के चंगुल से आज़ाद करवाया जाये। महंत नारायण दास ने अपने गुंडों से शांतमयी जत्थे पर हमला करवाया और बड़ी बेरहमी के साथ १३० सिंघों को शहीद कर दिया। इस कारनामे ने गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब का प्रबंध सिक्ख कौम की झोली में डाल दिया और महंत नारायण दास से गुरुद्वारा साहिब को आज़ाद करवा लिया गया।

अब अंग्रेज़ सरकार ने अकाली लहर को शक्ति द्वारा दबाने के यत्न किये। ७ नवंबर, १९२१ ई. को श्री अमृतसर साहिब के डिप्टी कमिशनर ने सचखंड श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब के तोशेखाने की चाबियाँ अपने अधिकार में ले लीं, ताकि श्री हरिमंदर साहिब श्री दरबार साहिब के प्रशासनिक कार्यों को रोक दिया जाये। २१ नवंबर, १९२१ ई. को अकालियों ने चाबियाँ वापस लेने के लिए मोर्चा लगा दिया। सरकार द्वारा २०० अकालियों को गिरफ़्तार कर लिया गया। अंत में सरकार को अकालियों के आगे झुकना पड़ा और १७ जनवरी, १९२२ ई. को चाबियाँ शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान सरदार खड़क सिंघ को वापस कर दीं।

यह एक महान विजय थी। इस विजय को कई दिनों तक मनाया जाता रहा और पूरे प्रांत में खुशियों के ऐसे दृश्य देखने को मिले जिनकी न तो कोई मिसाल है और न ही कोई तुलना की जा सकती है। इसी समय के दौरान अकालियों ने श्री अमृतसर साहिब की अजनाला तहसील में स्थित गुरुद्वारा साहिब गुरु का बाग़ में मोर्चा लगाया। इस गुरुद्वारे पर महंत सुंदर दास का अधिकार था, जो एक दुष्ट और दुराचारी व्यक्ति था। २९ अगस्त, १९२१ ई. को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने एक जत्था भेज कर इस गुरुद्वारे का प्रबंध अपने हाथों में ले लिया, मगर महंत ने गुरुद्वारा साहिब की ज़मीन पर अपना अधिकार न छोड़ा। अगस्त, १९२२ ई. में मोर्चा आरंभ हो गया। श्री अकाल तख़्त साहिब से जत्थे जाने शुरू हो गए, जिन पर सरकार ने अमानवीय अत्याचार किये और लगभग २०० अकालियों को गिरफ़्तार कर लिया। ३१ अगस्त, १९२२ ई. को तरनतारन साहिब से जत्था आया। सरकार ने पुलिस द्वारा जत्थे पर हमला करवाया, जिस कारण दो अकाली शहीद हो गए। इसके बाद १००-१०० अकालियों के शांतमयी जत्थे लगातार गुरुद्वारा साहिब गुरु का बाग आने शुरू हो गए। पुलिस ने उन पर बहुत ज़्यादा अत्याचार किये और नवंबर १९२२ ई. तक पाँच हज़ार से अधिक अकालियों को जेल में बंद कर दिया गया। अकाली जत्थों ने बहादुरी और धैर्य का परिचय दिया। अंत में विवश होकर अंग्रेज़ सरकार ने १७ नवंबर, १९२२ ई. को गुरुद्वारा साहिब गुरु का बाग पर सिक्खों का एकाधिकार स्वीकार कर लिया। जब गुरुद्वारा साहिब गुरु का बाग का मोर्चा चल रहा था तो उस समय के दौरान सरकार ने बहुत-से अकालियों को गिरफ़्तार कर अटक जेल में भेजने का फ़ैसला ले लिया। गिरफ़्तार किये गए बहुत-से सिंघों को लेकर

रेलगाड़ी ने हसन अब्दाल से गुज़रना था। गुरुद्वारा पंजा साहिब हसन अब्दाल की संगत ने ३० अक्तूबर, १९२२ ई. को, जिस दिन रेलगाड़ी ने गुरुद्वारा पंजा साहिब के स्टेशन पर पहुँचना था, इन कैदी सिक्खों को लंगर छकाने का फ़ैसला किया। यह सूचना मिलते ही ईर्ष्यावश सरकार ने गाड़ी को गुरुद्वारा पंजा साहिब के स्टेशन पर न रुकने का हुक्म दिया। रेलगाड़ी को रोकने के लिए बहुत-से सिंघ रेलवे लाईन पर बैठ गए। सिंघों के रेलवे लाईन पर बैठने पर भी रेलगाड़ी को न रोका गया, बल्कि गाड़ी उन पर चढ़ा दी गई, जिस कारण भाई प्रताप सिंघ और भाई करम सिंघ नामक दो सिक्ख शहीद हो गए तथा बहुत-से सिंघों के अंग कट गए और वे घायल हो गए। इसके बाद रेलगाड़ी को रोका गया और सिंघों ने लंगर छका कर अपना प्रण पूरा किया। यह एक महान घटना थी जो सिक्खों की बेमिसाल कुर्बानी के उदाहरण के रूप में हमेशा चमकती रहेगी।[२]

इस प्रकार हम देखते हैं कि उपरोक्त सभी मोर्चों को शुरू करने का प्रमुख कारण धार्मिक था, जिसमें गुरुद्वारा साहिबान को दुराचारी महंतों के चंगुल से छुड़वाना था। इन सभी मोर्चों में से 'जैतो का मोर्चा' का अलग स्थान है। जैतो एक छोटा-सा कसबा है, जो उस समय के अधीन था। यहाँ पर गुरुद्वारा गंगसर साहिब पातशाही दसवीं नामक ऐतिहासिक गुरुधाम सुशोभित है। वर्ष १९२३ के दौरान अकाली मोर्चों में यह विश्व भर में आकर्षण का एक केंद्र बन गया। नाभा के नरेश महाराजा रिपुदमन सिंघ की अकालियों के साथ बहुत हमदर्दी थी। उसने गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब के साके के दौरान शहीद हुए सिक्खों के लिए सम्मान के तौर पर 'शहीदी दिवस' मनाया था और आक्रोशस्वरूप काली दसतार सजायी थी। इसके अलावा उसने गुरुद्वारा साहिब गुरु का बाग के मोर्चो के दौरान अकालियों की गुप्त रूप से सहायता की थी। इन कारणों से अंग्रेज़ सरकार महाराजा के विरुद्ध हो चुकी थी। महाराजा, जो २० दिसंबर, १९११ ई. को तख़्त पर बैठा था, ९ जुलाई, १९२३ ई. में अपने नाबालिग पुत्र प्रताप सिंघ के पक्ष में गद्दी से उतार दिया गया।[३] ब्रिटिश सरकार के अनुसार महाराजा ने गद्दी स्वयं छोड़ी थी, परन्तु अकाली जानते थे कि अंग्रेज़ों ने महाराजा को गद्दी छोड़ने के लिए मजबूर किया है। अकाली नेता मास्टर तारा सिंघ ने इसकी तुलना महाराजा दलीप सिंघ को लाहौर दरबार के तख़्त से उतारने के बराबर की थी। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने महाराजा नाभा की सत्ता-बहाली का मामला अपने हाथों में लिया और बहु-सम्मति के साथ प्रस्ताव पारित किया गया। ऐसे समय में जबकि सिक्ख कौम में जागृति आ चुकी थी, सिक्ख राजा को गद्दी से उतारना सिक्ख कौम को चुनौती देने के समान था। इसी के अंतर्गत ९ सितंबर, १९२३ ई. को 'नाभा दिवस' मनाए जाने का फ़ैसला लिया गया।[४] इसके बाद महाराजा की बहाली के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने श्री अकाल तख़्त साहिब श्री अमृतसर साहिब से प्रतिदिन जैतो

के लिए जत्थे भेजने का फ़ैसला किया और साथ ही मोर्चा आरंभ कर दिया। शुरू में श्री अकाल तख़्त साहिब के समक्ष शांतमय रहने का प्रण लेकर प्रतिदिन २५ सदस्यों पर आधारित जत्थे जैतो जाने लगे। जब ये जत्थे गुरुद्वारा गंगसर साहिब जैतो पहुँचे तो पुलिस द्वारा शांतमय अकालियों पर बेतहाशा अत्याचार किया गया।

नाभा के लोग भी सरकार से खुश नहीं थे। इसी कारण आस-पास के इलाके की संगत ने यह फ़ैसला किया कि २५, २६ और २७ अगस्त, १९२३ ई. को गुरुद्वारा गंगसर साहिब में दीवान समारोह आयोजित किया जाये। इस समय पुलिस ने गुरुद्वारा साहिब में दाख़िल होकर गुरु-ताबिया बैठे सिंघ भाई इंदर सिंघ को गिरफ़्तार कर लिया।[५]

संगत ने इस बात पर सख्त एतराज प्रकट किया और फ़ैसला किया कि पाठ और दीवान तब तक जारी रहेंगे। जब तक सरकार अपनी गलती न मान ले। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने १ सितंबर, १९२३ ई. को २५ सिंघों का जत्था पाठ करने के लिए जैतो भेजा। इस जत्थे और इलाके की सिक्ख संगत ने पाठ करने आरंभ कर दिए। ब्रिटिश सरकार ने इसमें दख़ल दिया और रियासत नाभा की पुलिस लेकर १४ सितंबर, १९२३ ई. को गुरुद्वारा गंगसर साहिब पर हमला बोल दिया। सभी सिंघ, जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब का पाठ कर रहे थे या सुन रहे थे, गिरफ़्तार कर लिए गए। पूरे पंजाब में इस घटना का विरोध किया गया और सरकार के विरुद्ध प्रस्ताव पारित किये गए। १४ सितंबर के बाद जैतो में मोर्चा लग गया। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने १५ सितम्बर से श्री अकाल तख़्त साहिब से २५-२५ सिंघों के जत्थे भेजने शुरू कर दिए। इन्हें गिरफ़्तार किया जाता और दूर ले जाकर छोड़ा दिया जाता।[६] इन जत्थों के धैर्य और दृढ़ता से भारत के कुछ राष्ट्रीय नेता भी भावित हुए। कांग्रेस के प्रमुख नेता पंडित जवाहर लाल नेहरू के अनुसार, "सिक्खों ने आश्चर्यजनक हिम्मत और सहन-शक्ति दिखाई है तथा एक कदम भी पीछे न हटे और न ही पुलिस के ख़िलाफ़ अपने हाथ उठाए।"[७] पंजाब की ब्रिटिश सरकार द्वारा इन मोर्चों को ख़त्म करने के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी तथा शिरोमणि अकाली दल को १३ अक्तूबर, १९२३ ई. को ग़ैर-कानूनी घोषित कर दिया गया और सभी सदस्यों को पकड़ कर जेल के में बंद कर दिया गया। दूसरी तरफ़ आंदोलन को और मज़बूत करने के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने यह फ़ैसला किया कि वह गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब के साके की प्रथम शहीदी शताब्दी एवं ५०० अकालियों का एक बड़ा शहीदी जत्था जैतो भेजेगी। ९ फरवरी, १९२४ ई. को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने जत्था भेजने का फ़ैसला कर लिया। इस जत्थे के दौरान सिक्खों ने फिर शूरवीरता का प्रमाण दिया और बड़ी संख्या में शामिल हो गए। श्री अमृतसर साहिब के डिप्टी कमिशनर की रिपोर्ट के अनुसार जत्थे में शामिल होने वाले बाकायदा गुरुद्वारा साहिब आने वाले ही नहीं, बल्कि असली जुनूनी

इंसान भी थे।[८] बाद में डॉ. सैफूद्दीन किचलू, पंडित दीनानाथ तथा कांग्रेस पार्टी के कुछ अन्य सदस्य भी जत्थे में शामिल हुए। सरकारी रिपोर्टों के अनुसार श्री अमृतसर साहिब के घंटा घर से लगभग ३० हज़ार लोगों ने जत्था रवाना होता आंखों से देखा।[९] इस जत्थे ने भी श्री अकाल तख़्त साहिब के समक्ष यह अरदास की थी कि वो हर हाल में शांत रहेगा। पंजाब के जिन गाँवों में से यह जत्था गुज़रा, लोगों ने इसका स्नेहपूर्ण स्वागत किया। विभिन्न गाँवों में से गुज़रता हुआ और मालवा के सिक्खों से भरपूर सहयोग प्राप्त करता हुआ यह जत्था २० फरवरी, १९२४ ई. को बरगाड़ी (रियासत फरीदकोट) पहुँच तंबू लगा कर बैठ गया।[१०] २१ फरवरी, प्रात: काल को 'आसा की वार' के कीर्तन के बाद जत्था आगे बढ़ा। जत्था बहुत ही शांतमय जज़्बे में आगे बढ़ रहा था। उसके दाएं-बाएं लोगों की भीड़ थी। आगे पाँच निशान साहिब और मध्य श्री गुरु ग्रंथ साहिब का स्वरूप था। इस समय नाभा रियासत का प्रबंध मिस्टर विल्सन जॉनस्टोन (अंग्रेज़) के हाथ में था। २१ फरवरी, १९२४ ई. को जब यह जत्था गुरुद्वारा टिब्बी साहिब (जैतो) पहुँचा तो मिस्टर जॉनस्टोन विल्सन ने जत्थे पर गोली चलवा दी। गुरबाणी गायन करता हुआ, गोलियों की वर्षा में भी जत्था पूरे जोश के साथ गुरुद्वारा साहिब की तरफ बढ़ता गया। गुरु के सिक्ख कह रहे थे, "खालसा जी! मरना तो एक दिन है ही! शहीदी का पर्व लगा हुआ है। आज मृत्यु दुल्हन को ब्याह कर लाना है। पीछे मुड़ कर मत देखो! आगे बढ़ते चलो! गुरु साहिब और पुरातन सिंघों की कुर्बानियों को बट्टा मत लगने देना! यह साबित कर दो कि सिक्ख कौम जिंदा है, मरी नहीं।"[११] इस गोलीबारी के दौरान लगभग १०० सिंघ शहीद हो गए और २०० सिंघ घायल हो गए।[१२]

इस कत्लेआम के बाद अंग्रेज़ अधिकारी जॉनस्टोन विल्सन का विचार था कि सिक्ख डर जाएंगे और मोर्चा ख़त्म हो जायेगा, परन्तु हुआ इसके विपरीत। इस घटना ने सारी भारतीय राजनीति में हाहाकार मचा दी। जगह-जगह पर सरकार की कार्रवाई की निंदा की गई। बहुत-से भारतीय नेताओं ने सिक्खों के साथ हमदर्दी का इज़हार किया। इस घटना की ख़बर पूरे संसार में फैल गई। दिल्ली, कलकत्ता, बम्बई, मद्रास और करांची में पब्लिक जलसे किये गए, जिनमें मुहम्मद अली, शौकत अली, सी. आर. दास, पंडित मोती लाल नेहरू, पंडित मदन मोहन मालवीय आदि प्रसिद्ध राष्ट्रीय नेताओं ने तकरीर की। कांग्रेस पार्टी ने दिल्ली में एक विशेष मीटिंग बुलायी, जिसमें जैतो के मोर्चे के बारे में डॉ. किचलू ने रिपोर्ट पेश की। इसके परिणामस्वरूप पंडित जवाहर लाल नेहरू, प्रिंसिपल गिडवानी और के. संथनम को जैतो भेजा गया। नाभा में प्रवेश करते ही इन्हें गिरफ़्तार कर हवालात में रखा गया। पूरे देश में अकाली योद्धा प्रेरणादायक बन गए। जैतो का मोर्चा सिक्खों के लिए दूसरा ननकाणा साहिब का मोर्चा (साका) बन गया।

अब श्री अकाल तख़्त साहिब से ५००-५०० के और जत्थे जैतो की तरफ रवाना होना शुरू हो गए। सिक्खों ने शहीदी प्राप्त करने के लिए जाना तेज कर दिया। यह मोर्चा लम्बा चला। २८ फरवरी, १९२४ ई. को श्री अमृतसर साहिब से एक और जत्था जैतो के लिए रवाना हुआ। १४ मार्च, १९२४ ई. को यह जत्था जैतो पहुँच गया। गुरुद्वारा साहिब के चारों तरफ़ कंटीली तारें लगी हुई थीं। सभी तरफ़ पुलिस का पहरा था। गुरुद्वारा साहिब के निकट ही किले पर मशीनगनें तैनात थीं। हर तरफ़ फ़ौज और पुलिस बंदूकें ताने खड़ी थी। अंग्रेज़ अधिकारी विल्सन जॉनस्टोन अन्य अधिकारियों के साथ उस जगह पर मौजूद था। जब यह जत्था गुरुद्वारा गंगसर साहिब से १००-१५० गज़ की दूरी पर था तो उस समय कांग्रेसी नेता पंडित मदन मोहन मालवीय भी मौजूद थे। उन्होंने मिस्टर विल्सन जॉनस्टोन से कहा, "देख लो, जत्थे के पास कोई हथियार नहीं है! आप शांतमय तथा निहत्थे सिंघों पर गोली नहीं चला सकते!" यह सुन कर जॉनस्टोन चुप हो गया। जब जत्था आगे बढ़ा तो उसने गिरफ़्तारी का हुक्म दिया और जत्थे के सभी सिंघों को गिरफ़्तार कर लिया। दो-तीन दिन जैतो के किले में रखा और बाद में उन्हें नाभा जेल में भेज दिया। जेल अधिकारियों द्वारा गिरफ़्तार प्रदर्शनकारियों के साथ बहुत ही घटिया व्यवहार किया जाता था। जैतो का यह मोर्चा लगभग एक वर्ष तक चलता रहा। १७ अप्रैल, १९२५ ई. तक ५००-५०० अकालियों के १७ जत्थे जैतो पहुँचे। सरकार इन पर अत्याचार करती रही और जेलों में बंद करती रही। अंत में सरकार ने जैतो का गुरुद्वारा साहिब अकालियों को सौंप दिया। जुलाई, १९२५ में गुरुद्वारा एक्ट पास हो गया। उसके साथ यह मोर्चा भी समाप्त हो गया। अब सरकार ने जैतो के मोर्चे और गिरफ़्तार किये हुए सभी अकालियों को रिहा कर दिया। जुलाई, १९२५ ई. में जैतो में श्री अखंड पाठ साहिब करने की छूट दे दी गई। १०१ श्री अखंड पाठ साहिब की लड़ी शुरू की गई, जिनके भोग ६ अगस्त, १९२५ ई. को डाले गए। भोग के पश्चात् सभी जत्थे जैतो से चल कर ६ अगस्त, १९२५ ई. को तरनतारन साहिब में एकत्र हुए। यहाँ से ये जत्थे नगर कीर्तन के रूप में सचखंड श्री हरिमंदर साहिब श्री अमृतसर साहिब पहुँचे। यहाँ इन जत्थों को सम्मानित किया गया।

अब हम बात करते हैं कि जैतो का मोर्चा अन्य मोर्चों से अलग था। इस समय के दौरान सिक्ख लोग ब्रिटिश शासन के विरुद्ध जाग चुके थे। १८४७-१८४९ ई. के दौरान पंजाब पर अंग्रेज़ों का अधिकार होने से पहले भाई महाराज सिंघ जैसे शूरवीर योद्धाओं ने अंग्रेज़ों का सख़्त विरोध किया था और महाराजा दलीप सिंघ के सिक्ख राज को बचाने के लिए एक खुली बग़ावत की थी। जैतो के मोर्चे का भी वही स्वरूप था। भाई महाराज सिंघ ने भी पहले जगह-जगह पर जाकर माझा-दोआबा के सिक्खों को जागरूक किया और उनसे मर मिटने का प्रण लिया। फिर तेग उठा कर अंग्रेज़ों का जंग के मैदान में मुकाबला किया। अब जैतो के मोर्चे में

सिक्खों ने तेग न उठा कर अपने लोगों में जागृति लाकर कुर्बानियों के जज़्बे और शांतमय ढंग से महाराजा रिपुदमन सिंघ के हक में मोर्चे लगाए थे। पहले जितने भी मोर्चे लगे थे, उन सभी मोर्चों में महंतों के कहने पर ब्रिटिश सरकार ने उनके पक्ष में सिक्खों के विरुद्ध कार्रवाई की थी, जबकि जैतो के मोर्चे में तो सरकार ने सिक्खों के विरुद्ध सीधी कार्रवाई की थी। यहाँ तक कि गुरुद्वारा साहिब के निकट किले पर मशीनगनें भी तैनात कर रखी थीं। गुरुद्वारा साहिब के इर्द-गिर्द बंदूकधारी पुलिस का पहरा लगा हुआ था। हम जानते हैं कि जो सिक्ख कनाडा, अमेरिका में गए हुए थे, वे भी अंग्रेज़ शासन के विरुद्ध थे। उन्होंने अंग्रेज़ों के विरुद्ध ग़दर आंदोलन शुरू किया हुआ था। उन्होंने भी जैतो के मोर्चे में शमूलियत की थी। कनाडा में तो जैतो के मोर्चे का बहुत ज़्यादा प्रभाव पड़ा था। वहाँ के गदरियों ने भी अपना एक शहीदी जत्था जैतो के मोर्चे में भेजने का फ़ैसला कर लिया था। १९२४ ई. में कनाडा से ११ सिंघों का शहीदी जत्था वैनकुवर से रवाना हुआ, जो शिंघाई, हाँगकाँग तथा सिंगापुर से होता हुआ और वहाँ के सिक्खों को साथ लेकर ४२ सिक्खों सहित भारत पहुँचा। इन सभी का मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश शासन को ललकारना था ताकि वे सिक्ख रियासतों के मामले में अपने हस्तक्षेप को बंद करें। इस सब में उन्हें शक्ति खालसा पंथ द्वारा ही मिल रही थी। क्योंकि सिक्ख राजनीति में धर्म का बहुत ज़्यादा महत्व था, जिसे श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने आरंभ किया था, इसलिए उन्होंने इस मोर्चे का स्थान गुरुद्वारा गंगसर साहिब जैतो को चुना था।

अंत में हम कह सकते हैं जैतो का मोर्चा अन्य अकाली मोर्चे की अपेक्षा एक अलग स्वरूप रखता था। इसका उद्देश्य धार्मिक तथा राजनैतिक दोनों ही था और यह अंग्रेज़ सत्ता को एक चुनौती था।

संदर्भ-सूची :

१. S.S. Johar, The Heritage of Amritsar, Sundeep Prakashan, New Delhi, 1981, P. 105
२. G.S. Chhabra, Advance History of the Punjab, Vol. II, Prakashan Brother, Ludhiana, 1960, P. 477
३. महिंदर सिंघ, अकाली लहर, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, २०१५, पृष्ठ, ८२
४. ऊधम सिंघ, शहीदी यात्रा अथवा साका जैतो (नाभा), शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब, १९८०, पृष्ठ ९.
५. नरैण सिंघ, अकाली मोर्चे अते झब्बर, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब, २०२०, पृष्ठ १५८-१५९
६. करतार सिंघ एम. ए., सिक्ख इतिहास, भाग द्वितीय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब, २००६, पृष्ठ २६८
७. Jawaharl Lal Nehru, Gilmpses of World History, Asia Publishing House, New York, 1967, P.747.
८. महिंदर सिंघ, अकाली लहर, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, २०१५, पृष्ठ ९०.
९. उक्त।
१०. ऊधम सिंघ, शहीदी यात्रा अथवा साका जैतो (नाभा), शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब, १९८०, पृष्ठ २३.
११. उक्त, पृष्ठ ३३.
१२. नरैण सिंघ, अकाली मोर्चे अते झब्बर, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब, २०२०, पृष्ठ १६१

पंजाब के भाग्य का निर्णायक : सभरावां का युद्ध

*–डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'**

सतलुज नदी के पश्चिमी किनारे पर स्थित गांव सभरावां (सभराउं) पंजाब के इतिहास में एक अहम स्थान रखता है। पहले यह लाहौर ज़िले की तहसील कसूर का हिस्सा था, मगर आजकल यह तरनतारन ज़िले की पट्टी तहसील में पड़ता है। यह गांव अंग्रेजों-सिक्खों के मध्य लड़ी गई सबसे महत्वपूर्ण लड़ाई का गवाह है।

१० फ़रवरी, १८४६ ई. को सतलुज नदी के तट पर लड़ा गया सभरावां का युद्ध (जिसे अंग्रेज़ इतिहास में प्राय: Battle of Sobraon कहा जाता है) अंग्रेज़–सिक्ख युद्ध का अंतिम, निर्णायक और सर्वाधिक रक्तरंजित अध्याय था। यह युद्ध केवल दो सेनाओं के बीच टकराव नहीं था, बल्कि यह पंजाब की राजनीतिक संप्रभुता, खालसा सैन्य परंपरा, दरबारी षड्यंत्रों और ब्रिटिश औपनिवेशिक विस्तारवाद के बीच एक ऐतिहासिक संघर्ष था। इस युद्ध ने सिक्ख साम्राज्य की स्वतंत्र सत्ता की रीढ़ तोड़ दी और उत्तर भारत में ब्रिटिश प्रभुत्व को लगभग निर्विवाद बना दिया।

सभरावां का युद्ध भारतीय इतिहास में इसलिए भी विशेष महत्व रखता है क्योंकि इसमें सिक्ख सैनिकों ने अद्वितीय वीरता, अनुशासन और आत्मबल का प्रदर्शन किया, वहीं दूसरी ओर नेतृत्व की कमजोरी, आंतरिक विश्वासघात तथा राजनीतिक विघटन ने इस वीरता को निर्णायक सफलता में बदलने से रोक दिया। इस युद्ध के परिणामस्वरूप पंजाब की राजनीतिक दिशा बदल गई और कुछ ही वर्षों में संपूर्ण पंजाब ब्रिटिश साम्राज्य का अंग बन गया।

युद्ध की पृष्ठभूमि

महाराजा रणजीत सिंघ तथा सिक्ख साम्राज्य की शक्ति : महाराजा रणजीत सिंघ (१७८०-१८३९) ने पंजाब में एक शक्तिशाली, संगठित और आधुनिक सिक्ख साम्राज्य की स्थापना की थी। उनकी शासन-व्यवस्था का आधार सैन्य अनुशासन, धार्मिक सहिष्णुता और कुशल प्रशासन था। उन्होंने यूरोपीय सैन्य अधिकारियों की सहायता से खालसा सेना को आधुनिक ढंग से संगठित किया, जिसमें पैदल सेना, घुड़सवार सेना और तोपखाने का संतुलित विकास हुआ। महाराजा रणजीत सिंघ के समय तक सिक्ख साम्राज्य उत्तर-पश्चिम भारत की सबसे मज़बूत शक्ति बन चुका था और अफ़ग़ानों तथा अंग्रेज़ों, दोनों के लिए एक प्रभावी अवरोध था।

**१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा, लुधियाना, फोन : ६२३९६-०१६४१*

महाराजा रणजीत सिंघ के देहांत के बाद का राजनीतिक संकट : १८३९ ई. में महाराजा रणजीत सिंघ के देहांत के बाद सिक्ख साम्राज्य में राजनीतिक स्थिरता का अभाव पैदा हो गया। उत्तराधिकार का प्रश्न सुलझ नहीं पाया और दरबार में षड्यंत्रों का दौर शुरू हो गया। महाराजा खड़क सिंघ, नौनिहाल सिंघ तथा शेर सिंघ— इन सभी शासकों का शासन अल्पकालिक और विवादग्रस्त रहा। अंततः अल्पव्यस्क महाराजा दलीप सिंघ को गद्दी पर बैठाया गया, जिनके नाम पर वास्तविक सत्ता, दरबारी सरदारों और सेना के प्रभावशाली नेताओं के हाथ में चली गई।

दरबारी राजनीति और विश्वासघात : जून १८३९ ईस्वी में महाराजा रणजीत सिंघ के देहांत के बाद, पंजाब में अराजकता फैल गई। १८३९ ईस्वी से १८४५ ईस्वी तक, ६ वर्षों की अवधि के दौरान पंजाब में पांच बार राजा बदले। इस समय राज दरबार सत्ता हथियाने की साजिशों का अड्डा बन गया।

सिक्ख दरबार में डोगरा सरदारों— विशेषकर गुलाब सिंघ, धिआन सिंघ और सुचेत सिंघ का प्रभाव बढ़ता गया। इन सरदारों पर यह आरोप लगता रहा कि ये अपने निजी हितों के लिए अंग्रेज़ों से गुप्त संपर्क बनाए हुए थे। खालसा सेना, जो कभी महाराजा रणजीत सिंघ की आज्ञाकारी शक्ति थी, अब स्वयं को राज्य की संरक्षक मानने लगी और कई बार उसने दरबार पर दबाव बनाकर निर्णय थोपे। इससे शासन और सेना के बीच टकराव की स्थिति उत्पन्न हो गई।

डोगरा बंधुओं ने मिलकर कुंवर नौनिहाल सिंघ को इतना प्रभावित किया कि उन्होंने अपने पिता महाराजा खड़क सिंघ को कैद कर लिया। ५ नवंबर, १८४० ई. को महाराजा खड़क सिंघ की मृत्यु के बाद, डोगरा बंधुओं ने साजिश रचकर उसी दिन कुंवर नौनिहाल सिंघ की हत्या कर दी। कुंवर नौनिहाल सिंघ की मृत्यु से पंजाब को गहरा आघात लगा। उनकी मृत्यु के बाद, महाराजा खड़क सिंघ की विधवा और नौनिहाल सिंघ की माता, महारानी चंद कौर ने सिंहासन संभाला। लगभग ढाई महीने बाद, डोगरा धिआन सिंघ ने उन्हें पदच्युत कर दिया और कुंवर शेर सिंघ को महाराजा बना दिया। उनके शासन-काल में, डोगरा बंधुओं ने नौनिहाल सिंघ की विधवा साहिब कौर को ज़हर देकर उनका गर्भपात करवा दिया और महारानी चंद कौर की हत्या करवा दी। इसके बाद एक के बाद एक घटनाओं ने पंजाब के माहौल को दूषित कर दिया। खानाजंगी के इस दौर में पंजाब में अराजकता फैलती चली गई। अंग्रेज तो इसी सुनहरे अवसर की तलाश में थे।

खालसा सेना की संरचना और मानसिकता : खालसा सेना उस समय एशिया की सबसे बड़ी और अनुशासित सेनाओं में से एक थी। सैनिकों में धार्मिक उत्साह, वीरता और बलिदान की भावना प्रबल थी। वे स्वयं को 'पंथ की सेना' मानते थे

और युद्ध को धार्मिक–राष्ट्रीय कर्तव्य के रूप में देखते थे। इस सेना की सबसे बड़ी कमजोरी इसका केंद्रीय नेतृत्व था। सेनापति और दरबारी अधिकारी अक्सर आपसी प्रतिस्पर्धा और राजनीति में उलझे रहते थे, जिसका सीधा प्रभाव युद्धनीति पर पड़ा।

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की नीति : उधर ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी भारत में अपने साम्राज्य का निरंतर विस्तार कर रही थी। बंगाल, मद्रास और बंबई प्रेजीडेंसी के बाद अब उसकी निगाहें उत्तर-पश्चिम की ओर थीं। पंजाब एक समृद्ध, सामरिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण और सैन्य दृष्टि से सक्षम क्षेत्र था। अंग्रेज़ों को यह आशंका थी कि यदि सिक्ख साम्राज्य संगठित रहा तो यह उनके विस्तार के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा बनेगा।

युद्ध की ओर बढ़ते कदम : १८४५ ई. तक आते-आते सतलुज के दोनों ओर सेनाओं की तैनाती बढ़ गई। सीमावर्ती क्षेत्रों में तनाव लगातार बढ़ रहा था।

मार्च, १८४५ ई. में लाहौर दरबार के एक उच्चाधिकारी भूमि कर विभाग के लाल सिंघ महाराजा के अधीन क्षेत्रों में कर वसूलने के लिए सतलुज नदी के पार गए थे। मेजर ब्रॉडफुट ने लाल सिंघ के बिना अनुमति के सतलुज नदी पार करने पर आपत्ति जताई। उन्होंने लाल सिंघ को तुरंत लौटने का आदेश दिया। लाल सिंघ दूरदर्शी था। वो व्यर्थ में अंग्रेजों से लड़ना नहीं चाहता था, इसलिए वो अपने साथ गए अन्य सहायकों के साथ लौटने लगा। उसकी नावें नदी के किनारे से निकल ही रही थीं कि मेजर ब्रॉडफुट, अपने सहायक रॉबर्ट कस्ट के साथ, उसका पीछा करता हुआ आया और आखिरी नाव को रोक लिया। लाल सिंघ के एक आदमी को गोली मार दी गई और बाक़ी को गिरफ़्तार कर लिया गया।

अप्रैल १८४५ में, मेजर ब्रॉडफुट की घोषणा ने घावों पर नमक छिड़क दिया। ब्रॉडफुट ने घोषणा की कि मालवा का कोई भी क्षेत्र लाहौर दरबार के अधीन नहीं है, जबकि वास्तविकता यह थी कि कई गांव, जिनसे लाहौर दरबार को प्रतिवर्ष 20 लाख रुपये का भू-कर प्राप्त होता था, लाहौर सरकार के अधीन थे। ब्रिटिश सरकार 36 वर्षों (१८०९-४५) से इन गांवों पर लाहौर दरबार के अधिकार को मान्यता देती आ रही थी। ब्रॉडफुट की घोषणा ने सिक्खों में अंग्रेजों के प्रति आक्रोश पैदा कर दिया।

इसी प्रकार मोरां नामक गांव नाभा रियासत में स्थित था। सन् १८१९ ईस्वी में नाभा के शासक जसवंत सिंघ ने यह गांव महाराजा रणजीत सिंघ को दे दिया था। महाराजा रणजीत सिंघ ने बदले में यह गांव अपने एक सेवक धन्ना सिंघ को इनाम के तौर पर दे दिया। सन् १८४३ ईस्वी में नाभा के नए राजा देविंदर सिंघ किसी कारणवश धन्ना सिंघ से नाराज़ हो गए। इसी कारण देविंदर सिंघ ने उस गांव पर कब्जा कर लिया और धन्ना सिंघ की संपत्ति

भी लूट ली। अंग्रेजों ने नाभा के शासक का साथ दिया। लाहौर सरकार ने इसका विरोध किया और इसे अंग्रेजों के अत्याचार तथा अन्याय की कार्रवाई बताया। अंग्रेज़ सरकार ने इस कार्रवाई को उचित ठहराया। अंग्रेजों ने कहा कि जसवंत सिंघ ने उनकी अनुमति के बिना यह गांव महाराजा रणजीत सिंघ को दिया था, इसलिए यह दान अवैध था। इस घटना ने सिक्खों और अंग्रेजों के बीच तनाव को और बढ़ा दिया।

जवाहर सिंघ की मृत्यु के बाद ८ नवंबर, १८४५ ई. को लाल सिंघ को लाहौर सरकार का नया प्रधानमंत्री नियुक्त किया गया। उसने अपने भाई तेजा सिंघ को खालसा सेना का सेनापति नियुक्त किया। ये दोनों पहले से ही अंग्रेजों के साथ गठबंधन में थे। उस समय सिक्ख सेना की शक्ति में भारी वृद्धि हो चुकी थी, इसलिए लाल सिंघ और तेजा सिंघ उससे बहुत भयभीत थे। वे सिक्खों की इस शक्तिशाली सेना को अंग्रेजों से लड़वाकर उसे कमजोर करना चाहते थे। ऐसा करके वे एक ओर तो अपने पदों पर बने रह सकते थे और दूसरी ओर राहत की सांस ले सकते थे, इसी कारण उन्होंने सिक्ख सेना को अंग्रेजों के विरुद्ध भड़काना शुरू कर दिया।

प्रथम अंग्रेज़-सिक्ख युद्ध के प्रारंभिक संघर्ष : दिसंबर, १८४५ ई. में अंग्रेजों ने कई उल्टे-सीधे आरोप लगाकर १८०९ ई. की 'अमृतसर की संधि' तोड़ दी और सिक्खों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

मुदकी का युद्ध (१८ दिसंबर, १८४५ ई.) : मुदकी में हुआ युद्ध इस संघर्ष की पहली बड़ी मुठभेड़ थी। ३५०० घुड़सवारों, २००० पैदल तथा २० तोपों वाली सिक्ख सेना ने १२००० सैनिकों और ४८ तोपों वाली अंग्रेज सेना के छक्के छुड़ा दिए। सेनापति लाल सिंघ की गद्दारी के बावजूद सिक्ख बड़ी बहादुरी से लड़े। अंग्रेजों की भारी क्षति हुई, किंतु अंग्रेज़ों ने इसे अपनी विजय घोषित किया। यह युद्ध संकेत दे गया कि सिक्ख सेना की मारक क्षमता अब भी अत्यंत प्रबल थी।

फ़िरोज़शाह का युद्ध (२१-२२ दिसंबर, १८४५ ई.) : फ़िरोज़शाह का युद्ध अत्यंत भीषण था। ३०००० सैनिकों तथा १०० तोपों वाली खालसा सेना ने १७००० सैनिकों और ६९ तोपों वाली ब्रिटिश सेना को लगभग पराजित कर दिया था, किंतु निर्णायक क्षणों में लाल सिंघ के विश्वासघात के कारण सिक्ख सेना विजय से वंचित रह गई।

बद्दोवाल का युद्ध (२१ जनवरी, १८४६ ई.) : बद्दोवाल लुधियाना में एक ब्रिटिश छावनी थी और सतलुज नदी के पार फिल्लौर में एक सिक्ख छावनी थी। सरदार रणजोध सिंघ मजीठिया को इसकी देखरेख का जिम्मा सौंपा गया था। उसके पास लगभग १२००० सैनिक थे। लुधियाना की अधिकांश सेना मुदकी के युद्ध में भाग लेने के लिए बाहर गई हुई थी। यदि रणजोध सिंघ ने उस

समय लुधियाना पर हमला किया होता, तो वो आसानी से इस महत्वपूर्ण छावनी पर कब्जा कर सकता था। रणजोध सिंघ, लाल सिंघ और तेजा सिंघ से कम नहीं था। लाहौर दरबार के निर्देश पर, रणजोध सिंघ १०००० सैनिकों और ६० तोपों के साथ लुधियाना से १८ मील दूर स्थित बद्दोवाल पहुंचा। लुधियाना छावनी पर खतरे को देखते हुए, हैरी स्मिथ के नेतृत्व में कुछ सैनिकों को लुधियाना भेजा गया। २१ जनवरी, १८४६ ई. को बद्दोवाल में अंग्रेजों और सिक्खों के बीच युद्ध शुरू हुआ। इस युद्ध में सिक्खों ने अंग्रेजों को पराजित किया और उन्हें भागने पर मजबूर कर दिया। अंग्रेजों के लिए यह सौभाग्य की बात थी कि रणजोध सिंघ ने उनका पीछा नहीं किया और उन्हें भागने दिया।

अलीवाल का युद्ध (२८ जनवरी, १८४६ ई.) : अलीवाल में अंग्रेज़ों को महत्वपूर्ण रणनीतिक सफलता मिली। ३५०० सिक्ख मारे गये और उनकी ६७ तोपें अंग्रेजों के हाथ लगीं। इस युद्ध ने खालसा सेना की स्थिति को कमजोर कर दिया और सभरावां के निर्णायक संघर्ष की भूमिका तैयार कर दी।

सभरावां का युद्ध : १० फरवरी, १८४६ ई. : सभरावां का मैदान सतलुज नदी के किनारे स्थित था। सिक्ख सेना ने यहां मज़बूत मोर्चाबंदी की हुई थी— ऊंची मिट्टी की दीवारें, खाइयां और तोपों के लिए सुरक्षित स्थान बनाए गए थे। सतलुज नदी के पार जाने के लिए एक अस्थायी पुल बनाया गया था।

दोनों सेनाओं की सैन्य शक्ति : सिक्ख सेना— लगभग २०००० से २५००० सैनिक, ६०-७० भारी तोपें, अनुभवी पैदल और घुड़सवार टुकड़ियां। सिक्ख सेना का नेतृत्व सरदार शाम सिंघ अटारी कर रहे थे।

ब्रिटिश सेना : लगभग १५००० सैनिक, आधुनिक तोपखाना, प्रशिक्षित पैदल सेना और घुड़सवार दस्ते। सेना का नेतृत्व गवर्नर-जनरल लॉर्ड हार्डिंग और सेनापति सर ह्यूग गफ कर रहे थे।

युद्ध का प्रारंभ : १० फरवरी, १८४६ ई. की सुबह घने कोहरे के बीच ब्रिटिश तोपखाने ने गोलाबारी शुरू की। सिक्ख तोपों ने भीषण प्रतिकार किया। कई घंटों तक दोनों ओर से लगातार गोले बरसते रहे। सिक्ख तोपखाना अत्यंत प्रभावी सिद्ध हुआ और ब्रिटिश सेना को भारी क्षति पहुंची।

पैदल सेना का संघर्ष : दोपहर के समय ब्रिटिश पैदल सेना ने संगीनों के साथ सिक्ख मोर्चों पर धावा बोला। यहां आमने-सामने का युद्ध हुआ, जिसमें खालसा सैनिकों ने असाधारण साहस का परिचय दिया। कई स्थानों पर अंग्रेज़ टुकड़ियां पीछे हटने को विवश हो गईं।

निर्णायक क्षण और पुल का टूटना : युद्ध का सबसे निर्णायक क्षण तब आया जब सतलुज पर बना अस्थायी पुल लाल सिंघ, तेजा सिंघ तथा

उनके साथियों ने तोड़ दिया। इससे सिक्ख सेना को नदी पार तक रसद और असला मिलना बंद हो गया। बड़ी संख्या में सैनिक या तो युद्धभूमि में मारे गए या नदी में डूब गए।

युद्ध की भयावहता : सभरावां का युद्ध अत्यंत रक्तरंजित था। समकालीन विवरणों के अनुसार यह युद्ध इतना भीषण था कि सतलुज नदी का पानी तक लाल हो गया था। सिक्ख सैनिकों ने अंतिम सांस तक संघर्ष किया, किंतु अंतत: उन्हें पराजय स्वीकार करनी पड़ी। सरदार शाम सिंघ अटारी वीरता से लड़ते-लड़ते शहीद हो गये। सरदार साहिब के शहीदी स्थान पर अब एक सुंदर गुरुद्वारा साहिब सुशोभित है।

युद्ध के परिणाम : सभरावां की पराजय के साथ ही प्रथम अंग्रेज़–सिक्ख युद्ध समाप्त हो गया। सिक्ख साम्राज्य सैन्य और राजनीतिक दोनों दृष्टियों से टूट चुका था। युद्ध के बाद लाहौर की संधि (९ मार्च, १८४६ ई.) हुई, जिसके अंतर्गत सिक्ख राज्य को भारी युद्ध-क्षतिपूर्ति देनी पड़ी। जम्मू-कश्मीर और सतलुज के पार के कई क्षेत्र अंग्रेज़ों को सौंप दिए गए। हर्जाने के रूप में पचास लाख रुपए भी देने पड़े।

संधि के बाद गुलाब सिंघ डोगरा को जम्मू–कश्मीर का शासक बनाया गया। यह निर्णय सिक्ख साम्राज्य के लिए एक बड़ा राजनीतिक आघात था।

महाराजा दलीप सिंघ नाममात्र के शासक रह गए। वास्तविक सत्ता ब्रिटिश रेज़िडेंट और संरक्षक परिषद के हाथों में चली गई।

इस (विश्वासघातक) पराजय ने सिक्ख समाज को गहरा मानसिक आघात पहुंचाया। खालसा सेना, जो कभी अजेय मानी जाती थी, अब पराजित हो चुकी थी।

सभरावां का युद्ध द्वितीय अंग्रेज़–सिक्ख युद्ध (१८४८-४९ ई.) की भूमिका बना, जिसके बाद १८४९ में पंजाब पूरी तरह से ब्रिटिश साम्राज्य में विलीन हो गया।

उपसंहार

सभरावां का युद्ध सिक्ख इतिहास का एक अत्यंत मार्मिक और निर्णायक अध्याय है। यह युद्ध हमें यह सिखाता है कि केवल वीरता और सैन्य शक्ति ही पर्याप्त नहीं होती, बल्कि राजनीतिक एकता, दूरदर्शी नेतृत्व और आंतरिक स्थिरता भी उतनी ही आवश्यक होती है। १० फरवरी, १८४६ ई. का यह युद्ध आज भी भारतीय इतिहास में बहादरी, संघर्ष और साम्राज्यवादी राजनीति का प्रतीक बना हुआ है।

रिजक की तलाश तथा उसकी चिंता

–डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'*

'रिजक' (रिज़्क) का भावार्थ है— 'रोज़ी-रोटी'। 'रोज़ी-रोटी' का भावार्थ है— 'रोज़गार' यानि 'जीविका'। 'रोटी' शब्द भी 'रोज़ी' से ही बना है। 'रोज़ी' और 'रोटी' समानार्थक शब्द हैं। यह कहना मुश्किल है कि इनमें से कौन-सा तत्सम शब्द है और कौन-सा तद्भव? शायद ही दुनिया में कोई साधारण प्राणी हो, जिसे रिजक की तलाश न हो। जीविकोपार्जन, जीवन-निर्वाह हेतु हम सांसारिक प्राणी कोई न कोई व्यवसाय, रोज़गार, नौकरी या काम-धंधा अवश्य करते हैं। इसके बिना गुज़र-बसर हो ही नहीं सकती। रिजक की तलाश में हम यहां-वहां जाते हैं, घूमते रहते हैं। कई बार तो हम बहुत दूर तक चले जाते हैं। अनेक लोग रिजक की तलाश में, इसे प्राप्त करने हेतु अपना घर-बार छोड़कर, अपने परिजनों से दूर परदेस-विदेश में भी चले जाते हैं।

रिजक की तलाश में हम उम्र भर भटकते रहते हैं। श्री गुरु अरजन देव जी राग गूजरी में फरमान करते हैं :

काहे रे मन चितवहि उदमु जा आहरि हरि जीउ परिआ॥

ऐ मन! तू रिजक की खातिर चिंतित मत हो! प्रभु स्वयं तेरे लिए यत्न में लगा हुआ है।

सैल पथर महि जंत उपाए
ता का रिजकु आगै करि धरिआ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४९५)

भावार्थ यह कि चट्टानों व पत्थरों में भी परमात्मा जीव पैदा करता है। उनकी खुराक का इंतज़ाम परमात्मा ने पहले से कर रखा होता है।

हमें अपने रिजक की प्राप्ति हेतु सच्चे हृदय से, ईमानदारी के साथ मेहनत करते रहना चाहिए। महापुरुष, संत, गुरु, भक्त, साधु भी स्वयं परिश्रम का, मेहनत का काम करते हैं, अपने हाथों से किरत करते हैं। वे किरत (श्रम) करते हुए कर्ता पुरख को याद रखते हैं। किरत करते हुए कर्ता पुरख को याद रखने से, उसका नाम जपने से किरत भी सुमिरन बन जाती है। रिजक की तलाश करते वक्त दयालु परमात्मा का ध्यान धरने से हमारे तमाम यत्न, प्रयत्न, क्रिया-कलाप सुमिरन बन जाते हैं। हमारे द्वारा प्रभु का किया हुआ नाम-सुमिरन भी किरत बन जाता है, रिजक की तलाश बन जाता है। हम अच्छी तरह जानते हैं कि वाहिगुरु सबको देने वाला है।

बी-एक्स-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००८, फोन : ९८७२२-५४९९०

हमारे पैदा होने से पहले वह हमारी रोज़ी-रोटी, खुराक का प्रबंध कर देता है। वह गर्भावस्था में मौजूद प्रत्येक प्राणी तक भी आहार पहुंचाता है। फिर रोज़ी-रोटी, रिजक की इतनी ज्यादा फिक्र क्यों? क्यों इस फिक्र में अपना चैन, सुख, नींद गंवाते हैं? रिजक की तलाश करते समय, कोई भी कार्य-व्यवसाय करते समय हमें अकाल पुरख को नहीं भूलना चाहिए। उस पर पूर्ण भरोसा रखना चाहिए। श्री गुरु अरजन देव जी हमारा मार्गदर्शन करते हैं :

सिरि सिरि रिजकु संबाहे ठाकुरु काहे मन भउ करिआ ॥२॥

ऊडै ऊडि आवै सै कोसा तिसु पाछै बचरे छरिआ ॥

उन कवनु खलावै कवनु चुगावै मन महि सिमरनु करिआ ॥३॥

सभ निधान दस असट सिधान ठाकुर कर तल धरिआ ॥

जन नानक बलि बलि सद बलि जाईऐ तेरा अंतु न पारावरिआ ॥ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४९५)

भावार्थ यह है कि प्रत्येक जीव को मालिक रिजक पहुंचाता है। ए मेरे मन! तू क्यों डर रहा है? कूंज उड़ते-उड़ते सैकड़ों कोस दूर आ जाती है। वह अपने बच्चे पीछे छोड़ आती है। उन बच्चों को कौन खिलाता व चुगा चुगाता है? क्या तुमने मन में कभी विचार किया है? सारे खज़ाने और अठारह शक्तियां मालिक ने अपने हाथ में रखी हुई हैं। गुरु जी कहते हैं—प्रभु पर सदैव कुर्बान जाना! उसके आर और पार का कोई अंत नहीं है।

हमें अपने रिजक की तलाश अवश्य करते रहना चाहिए, हाथ पर हाथ धरे नहीं बैठे रहना चाहिए। 'कितना मिलेगा, 'कब मिलेगा' यह चिंता नहीं करनी चाहिए। जिसने हमें पैदा किया है, जिसने सबको पैदा किया है, उसे हमारी फिक्र है। बस, उसे सदैव याद रखना है, भुलाना नहीं है। तीसरे गुरु श्री गुरु अमरदास जी 'अनंदु साहिब' बाणी में फरमान करते हैं :

माता के उदर महि प्रतिपाल करे सो किउ मनहु विसारीऐ ॥

मनहु किउ विसारीऐ एवडु दाता

जि अगनि महि आहारु पहुचावए ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९२०)

अर्थात् (आत्मिक आनंद प्राप्त करते हुए) परमात्मा को कभी नहीं भूलना चाहिए, जो माँ के गर्भ में भी (बच्चे का) पालन करता है। इतने बड़े दाता को दिल से क्यों भुलाएं, जो (गर्भ की) अग्नि में भी आहार पहुंचाता है?

लोभ, लालच से दूर रहकर, मोह-माया से बचकर हमें ईमानदारी से गुज़र-बसर करने लायक रिजक जुटाना है और श्री गुरु अमरदास जी के पावन अनमोल वचनों को याद रखना है :

एहु कुटंबु तू जि देखदा चलै नाही तेरै नाले ॥

साथि तेरै चलै नाही तिसु नालि किउ चितु लाईऐ ॥

ऐसा कंमु मूले न कीचै जितु अंति पछोताईऐ ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ९१८)

सभि रस मिठे मंनिऐ सुणिऐ सालोणे॥

–डॉ. मनजीत कौर*

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का पावन फरमान है :

अलप अहार सुलाप सी निद्रा दया छिमा तन प्रीति॥
सील संतोख सदा निरबाहिबो ह्वैबो त्रिगुण अतीत॥२॥
काम क्रोध हंकार लोभ हठ मोह न मन सो लयावै॥
तब ही आतम तत को दरसै परम पुरख कह पावै॥

अर्थात् थोड़ा खाना, थोड़ा सोना, दया, क्षमा आदि गुणों से प्रीति, शांत एवं संतोषी स्वभाव के धारक बनकर, माया के त्रिगुणी प्रभाव से निर्लिप्त रहकर, काम, क्रोध, अहंकार लोभ, मोह आदि विकारों को मन में न लाने वाले ही आत्म स्वरूप को देखते हुए परमेश्वर को पा लेते हैं अर्थात् जीवात्मा-परमात्मा एकरूप बन जाते हैं।

हमारे भोजन का हमारे भजन-कीर्तन पर गहरा प्रभाव पड़ता है, अनेक धर्म-ग्रंथों में इसका विवरण मिलता है। हमारे शरीर की खुराक भोजन है तथा आत्मा की खुराक भजन-कीर्तन है। इस संदर्भ में ज्ञानी संत सिंघ जी मसकीन बड़ा सुंदर समझाया करते थे– "शारीरिक जीवन भोजन की बुनियाद पर खड़ा है। शरीर की संपूर्ण शक्ति भोजन के सहारे खड़ी है। इससे भी गहरी बात कि भोजन से बनी शक्ति अगर जरूरत से ज्यादा हो जाए तो वह विकारों को जन्म देती है। इसके विपरीत भजन एक आंतरिक खुराक है। भजन से बनी शक्ति से जो कार्य होंगे वे खुद के साथ-साथ दूसरों को भी सुख देने वाले होंगे। भजन का रस भोजन के रस पर प्रभावकारी होता है, इसलिए भजन-बंदगी करने वाले भोजन कम ही खाया करते हैं। उन्हें अल्पाहार में ही आनंद की अनुभूति होती है। पावन बाणी में इस संदर्भ में सुंदर उपदेश है :

सेव कीती संतोखीईं जिन्ही सचो सचु धिआइआ॥
ओन्ही मंदै पैरु न रखिओ करि सुक्रितु धरमु कमाइआ॥
ओन्ही दुनीआ तोड़े बंधना अंनु पाणी थोड़ा खाइआ॥
तूं बखसीसी अगला नित देवहि चड़हि सवाइआ॥
वडिआई वडा पाइआ॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना ४६६)

अर्थात् संतोषी व्यक्ति सत्य की आराधना करते हैं और वे सही मायनों में ही सेवा करते हैं। वे गलत मार्ग पर कदाचित पांव नहीं धरते और कर्तव्य-पालन करते हुए धर्म-कर्म करते हैं। वे दुनिया के कार्य-व्यवहार के बंधनों में नहीं पड़ते तथा अल्प

*बी-एक्स-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००८, फोन : ९८७२२-५४९९०

आहार ग्रहण करते हैं। प्रभु-कृपा द्वारा वे सदा प्रफुल्लता में रहते हैं और उन्हें प्रभु-प्राप्ति हो जाती है।

भोजन ही औषधि है तथा भोजन ही रोग का कारण है। अब सवाल यह उठता है कि यदि भोजन ही औषधि है तो रोग का कारण कैसे है? इसका स्पष्ट-सा जवाब है कि जब भोजन में सात्विकता तथा नियमितता होगी तो वह औषधि का रूप होगा और इसके विपरीत, भोजन में तामसिकता एवं अनियमितता रोग का कारण बनेगी। भोजन के संदर्भ में कहा जाता है कि भोजन को केवल पोषण के रूप में ही नहीं लिया जाता, बल्कि क्या खाया, कब खाया, किसके साथ खाया तथा तैयार किस मानसिकता के साथ किया, यह भी महत्वपूर्ण है। इन सब बातों का मनुष्य के स्वास्थ्य, मानसिक स्थिति एवं आध्यात्मिक विकास पर भी प्रभाव पड़ता है।

लोक-प्रचलित उक्ति है– "जैसा खाओगे अन्न, वैसा बनेगा मन।" इसके साथ ही जीवन के हर पहलू में 'अति' का त्याग करने का परामर्श मनीषियों द्वारा दिया गया है– "अति सर्वत्र वर्जयेत।" इस संदर्भ में ज्ञानी संत सिंघ जी मसकीन बड़ा सुंदर समझाया करते थे कि 'अति भोजन' करने वाले को 'भोगी' कहा जाता है और 'अति भजन' करने वाले को 'योगी' कहा जाता है। दोनों तरह के लोगों पर पड़ने वाला 'अति' का प्रभाव अलग-अलग है। 'अति भोजन' करने वाला शारीरिक रूप से रोगी हो जाता है, जबकि 'अति भजन' करने वाला मन से रोग-मुक्त हो जाता है। भजन का रस और शक्ति भोजन की 'अति' वाली अहमियत को समाप्त कर देती है।

अपने आलेख के शीर्षक के अंतर्गत जो विषय है, उस पावन शब्द का उच्चारण श्री गुरु नानक देव जी के मुखारविंद से 'सिरीरागु' में हुआ है। इस शब्द में गुरु जी ने केवल मनुष्य के भोजन पर ही नहीं, मनुष्य के पहनावे, सवारी करने, ऐशो-आराम आदि पर भी चर्चा की है। अगर ये समस्त क्रियाएं मानव-मन को विकृत करती हैं तो इनमें प्राकृतिक रूप से शोध की परम आवश्यकता है।

सिरीरागु महला १ ॥
सभि रस मिठे मंनिऐ सुणिऐ सालोणे ॥
खट तुरसी मुखि बोलणा मारण नाद कीए ॥
छतीह अंम्रित भाउ एकु जा कउ नदरि करेइ ॥१ ॥
बाबा होरु खाणा खुसी खुआरु ॥
जितु खाधै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥१ ॥रहाउ ॥
रता पैनणु मनु रता सुपेदी सतु दानु ॥
नीली सिआही कदा करणी पहिरणु पैर धिआनु ॥
कमरबंदु संतोख का धनु जोबनु तेरा नामु ॥२ ॥
बाबा होरु पैनणु खुसी खुआरु ॥
जितु पैधै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥१ ॥रहाउ ॥
घोड़े पाखर सुइने साखति बूझणु तेरी वाट ॥
तरकस तीर कमाण सांग तेगबंद गुण धातु ॥
वाजा नेजा पति सिउ परगटु करमु तेरा मेरी जाति ॥३ ॥

बाबा होरु चड़णा खुसी खुआरु ॥
जितु चड़िऐ तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥१॥ रहाउ ॥
घर मंदर खुसी नाम की नदरि तेरी परवारु ॥
हुकमु सोई तुधु भावसी होरु आखणु बहुतु अपारु ॥
नानक सचा पातिसाहु पूछि ना करे बीचारु ॥४॥
बाबा होरु सउणा खुसी खुआरु ॥
जितु सुतै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥१॥ रहाउ ॥४॥७॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना १६)

मन को प्रबोधित करते हुए गुरु जी ने फरमाया है कि अगर मन प्रभु-चरणों में रम जाए, जुड़ जाए तो समस्त खाद्य पदार्थ अमृत सदृश्य रस भरपूर समझो! नमकीन पदार्थों की भांति स्वादिष्ट समझो! प्रभु-नाम का उच्चारण मुख में खट्टे स्वाद वाला पदार्थ समझो! ईश्वर का गुणगान करना अर्थात् उसकी महिमा का गायन करना भोजन का स्वाद बढ़ाने वाले मसाले समझो! प्रभु के संग एकरस प्रेम करना, छत्तीस प्रकार के अति स्वादिष्ट व्यंजनों का ज़ायक़ा समझो! परंतु यह तभी संभव है अगर परमेश्वर की कृपा-दृष्टि सदैव बनी रहे। गुरु जी समझाते हैं कि हे भाई! जिन पदार्थों को खाना ख्वार होने के समान है, जिन पदार्थों के सेवन से शरीर रोगी होता है, मन में गलत विचार आने शुरू हो जाते हैं, उनसे सदैव परहेज करना चाहिए।

मनुष्य की पोशाक कैसी होनी चाहिए, इस संदर्भ में गुरु जी फरमान करते हुए समझाते हैं कि अगर मन प्रभु-प्रीति में रंग जाए तो इसे लाल (रंगदार) पोशाक के समान जानो! दान-पुण्य करना, जरूरतमंदों की मदद करना, सफेद वस्त्र (शुद्धता) मानो! अंतर्मन की कालिमा को निकाल देने को नीले रंग की पोशाक जानो! प्रभु-चरणों का ध्यान धरना मानों चोगा (चोला) है। हे प्रभु! तेरा नाम ही मेरा धन है, मेरा यौवन है। संतोष को मैंने अपना कमरबंद बनाया है। गुरु पातशाह समझाते हैं कि हे भाई! जिस पोशाक को पहनकर मन विचलित हो और मन में विकार चल पड़ें, ऐसा पहनावा व्यक्ति को ख्वार करता है ।

गुरु जी जीव की सवारी का वर्णन करते हुए कलियुगी जीवों को समझाते हैं कि हे प्रभु! तेरे चरणों में जुड़ाव अर्थात् शुभ जीवन-मार्ग को पूर्णतया समझना मेरे लिए सुंदर सोने की दुमची व काठी वाले घोड़े की सवारी है। तेरा गुणानुवाद करने का प्रयास करना मेरे तरकश में तीर, बरशी एवं तेगबंद हैं। तेरे द्वार पर ससम्मान जाना मेरे लिए नगाड़ा एवं भाला है। तेरी कृपा-दृष्टि मेरे मालिक, मेरे लिए उच्च कुल है। हे भाई! जिस (घोड़े की) सवारी करने से तन पीड़ित हो और मन में भी विकार (अहं आदि) उत्पन्न होने लगें, तो ऐसी घुड़सवारी जीव को ख्वार ही करती है अर्थात् उसके विचारों को निम्न दर्जे का बना देती है।

इससे आगे गुरु जी का पावन फरमान है कि महलों में निवास करना वास्तव में मेरे लिए तेरे नाम से पैदा हुई खुशी है। तेरी कृपा-दृष्टि ही मेरा कुटुंब अर्थात् परिवार है। मेरे लिए आदेश वही भला है जो तुझे प्रवान है अन्यथा कहने-सुनने को

तो बहुत कुछ है। सदास्थिर प्रभु उपरोक्त जीवन वाले जीव की और ज्यादा परख, जांच-पड़ताल नहीं करता। हे भाई! वह ऐशो-आराम भी ख्वार करने वाला है जिसे जीवन में अपना लेने से मन में विकार उत्पन्न होते हैं और तन रोगी हो जाता है।

अत: स्पष्ट है कि जिस आहार, विचार तथा व्यवहार से नैतिकता का पतन हो उसे जितनी जल्दी संभव हो, बदलने का प्रयास करें! वैसे भी कलियुगी जीवों का जीवन अक्सर अधम स्थिति में ही गुजरता है।

"बाबा होरु खाणा खुसी खुआरु॥" इस भाव को श्री गुरु नानक देव जी ने 'जपु जी साहिब' में भी स्पष्ट किया है। १८वीं पउड़ी में गुरु जी ने फरमाया है– "असंख मलेष मलु भखि खाहि॥" अर्थात् असंख्य लोग ऐसे हैं जो बुद्धिहीन अर्थात् दुरमति वाले हैं; जो न खाने योग्य पदार्थों को भी खाते रहते हैं। न खाने योग्य पदार्थों को खाने वाले लोग वास्तव में रोगों को ही आमंत्रित करते हैं।

गुरबाणी में जीवन जीने की कितनी सहज और सरल युक्ति बताई गई है, लेकिन हमारी फितरत है कि हम हर समय इसके विपरीत चलकर खुशियों की (बनावटी) चाहत रखते हैं। अगर आत्मिक सुख और आनंद की चाहत एवं अभिलाषा है तो सांसारिक क्षणिक सुखों को त्याग कर गुरु-शिक्षा पर अमल कर लिया जाए तो मनुष्य की बुद्धि में रतन, जवाहरात, अनमोल मोती उत्पन्न हो जाएं अर्थात् गुरु-शिक्षा का मनसा-वाचा-कर्मणा से मनन करने से हृदय में परमेश्वर के गुण पैदा हो जाएं :

मति विचि रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी॥

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना २)

भोजन खाने से पूर्व, जलपान से पूर्व यदि भगवान का शुक्रिया अदा किया जाए तो निश्चित ही हम भगवान के प्रति शुक्रगुजार रहेंगे और हमारा मन अमृत-सा स्वाद पाकर तृप्त हो जाएगा।

वाहिगुरु रहमत करें और हमारा जीवन गुरबाणी आशयानुसार सहज एवं आनंद भरपूर बन जाए! सच ही तो कहा गया है :

जो बात दवा से बन न सके,
वो बात दुआ से होती है।
मुर्शिद जब कामिल मिलता है,
तो बात ख़ुदा से होती है।

हम भाग्यशाली हैं कि हमें कामिल मुर्शिद के रूप में मिले हैं– युगो-युग अटल श्री गुरु ग्रंथ साहिब, जो समूची मानवता की रहनुमाई करने में पूर्णत: सक्षम हैं।

खबरनामा

न्यूजीलैंड में नगर कीर्तन का विरोध करना
विश्व भाईचारे की सामाजिक पहचान को चुनौती : एडवोकेट धामी

श्री अमृतसर साहिब : २१ दिसंबर : सिक्खों द्वारा न्यूजीलैंड में शांतिपूर्वक और धार्मिक मर्यादा के अनुसार सजाए गए नगर कीर्तन का कुछ स्थानीय लोगों द्वारा विरोध किया जाना बेहद दुखदायी और चिंताजनक है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने इस मामले पर गहरी चिंता प्रकट करते हुए कहा कि सिक्ख भाईचारा सदा से ही विश्व भाईचारे के कल्याण, शांति, सहनशीलता और विकास के लिए अपना उल्लेखनीय योगदान देता आ रहा है। इसके बावजूद सिक्खों की धार्मिक रिवायतों को नफ़रती नज़रिए के साथ देखा जाना अति निंदनीय है।

एडवोकेट धामी ने कहा कि सिक्ख धर्म की बुनियाद सरबत्त का भला, भ्रातृभावना और मानवता की सेवा पर टिकी हुई है। नगर कीर्तन सिक्ख धर्म की एक पवित्र धार्मिक परंपरा है जो समाज में आपसी एकता, प्यार और भाईचारे का संदेश देती है। ऐसे धार्मिक समारोहों का विरोध करना गुरु साहिबान के एकता के संदेश पर गहरी चोट है।

उन्होंने कहा कि दुनिया भर के विभिन्न देशों में बसता सिक्ख भाईचारा सदा ही स्थानीय लोगों के साथ मिल कर रहता है और प्रत्येक देश के कानून एवं संस्कृति का पूर्ण सम्मान करता है। सिक्ख समारोहों के दौरान लंगर और निष्काम सेवा के द्वारा मानव-कल्याण का संदेश दिया जाता है, जिससे सामाजिक भाईचारा मज़बूत होता है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने न्यूजीलैंड व भारत सरकार से अपील की कि वह इस मामले का गंभीरता के साथ नोटिस ले और सिक्ख भाईचारे को अपने धार्मिक अधिकारों के अनुसार समारोह आयोजित करने के लिए सुरक्षित व सहयोगी माहौल मुहैया करवाए। उन्होंने कहा कि धार्मिक आज़ादी और आपसी सम्मान किसी भी बहु-सांस्कृतिक समाज की असली पहचान होती है।

एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने न्यूजीलैंड के अगुआ सिक्खों को इस घटना से सम्बन्धित वहां की सरकार और विरोध प्रदर्शन करने वाले लोगों के साथ मिल-बैठ कर विचार-चर्चा करने की भी अपील की। उन्होंने कहा कि गुरु-उपदेश के निर्देशन में ही इस मसले को पूर्णतया हल करने के लिए यत्न किये जाएँ और आक्रोश भरे माहौल से बचा जाये।

सरकार शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मामलों में दख़ल देकर लोगों का ध्यान भटकाने की कर रही है कोशिश : एडवोकेट धामी

श्री अमृतसर साहिब : १ जनवरी : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब के ३२८ पवित्र सरूपों से सम्बन्धित मामले पर पंजाब की भगवंत मान सरकार द्वारा की जा रही राजनीति पर गंभीर सवाल करते हुए कहा कि सरकार दोहरी नीति अपना कर सिक्ख भावनाओं के साथ खिलवाड़ कर रही है।

उन्होंने कहा कि एक तरफ़ भगवंत मान सरकार के कार्य-काल के दौरान बेअदबी की घटनाएँ निरंतर सामने आ रही हैं, जबकि दूसरी तरफ़ इन गंभीर मामलों से लोगों का ध्यान हटाने के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अंदरूनी प्रशासनिक मामलों में जानबूझ कर दख़ल दिया जा रहा है। एडवोकेट धामी ने कहा कि भगवंत मान अपने राजनैतिक आका अरविन्द केजरीवाल को खुश करने और अपनी मुख्यमंत्री की कुर्सी बचाने के लिए ऐसी राजनीति कर रहे हैं।

उन्होंने कहा कि भगवंत मान सरकार बरगाड़ी बेअदबी मामले सहित अन्य बेअदबी की घटनाओं में इंसाफ़ देने में बुरी तरह से नाकाम साबित हुई है। न केवल दोषियों को सज़ा दिलाने में सरकार असफल रही है, बल्कि बेअदबी की घटनाएँ रोकने में भी कोई ठोस और प्रभावशाली कदम नहीं उठाए गए।

उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी सिक्ख पंथ द्वारा चुनी हुई संस्था है, जिसके आज़ाद अस्तित्व और संवैधानिक मर्यादा का उल्लंघन कर मान सरकार अल्पसंख्यक सिक्खों की इस केंद्रीय संस्था को किसी एजंडे के अंतर्गत कमज़ोर करने की नीति पर काम कर रही है। उन्होंने कहा कि यह किसी भी तरह से उचित नहीं है कि कोई सरकार शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रशासनिक मामलों को जानबूझ कर गलत रंग में पेश करके राजनीति करे।

एडवोकेट धामी ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि ३२८ पवित्र सरूपों के शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा हल किए जा चुके मामले में पंजाब सरकार राजनीति करने से बाज आए और इससे सम्बन्धित कड़ा संघर्ष करने के लिए हमें मजबूर न करे।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट धामी ने राम रहीम को फिर से पैरोल दिए जाने की निंदा की

श्री अमृतसर साहिब : ४ जनवरी : संगीन अपराधों में सज़ा काट रहे डेरा सिरसा प्रमुख गुरमीत राम रहीम को एक बार फिर से ४० दिन की पैरोल दिए जाने की शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने सख़्त शब्दों में निंदा की है।

एडवोकेट धामी ने कहा कि जो व्यक्ति गंभीर अपराधों के अधीन सज़ा काट रहा है और सिक्ख धर्म-विरोधी गतिविधियों का भी दोषी है उस पर सरकारों की यह दरियादिली हैरानीजनक ही नहीं, बल्कि लोकतंत्र और इंसाफ़-प्रणाली का भी मज़ाक है। एडवोकेट धामी ने कहा कि यदि सरकारों ने दोषियों को राजनैतिक लाभ के लिए राहत देने का यह रुझान जारी रखा तो लोगों का इंसाफ़-प्रणाली से भरोसा उठ जायेगा।

आम आदमी पार्टी की नेता आतिशी द्वारा विधान सभा में गुरु साहिबान के प्रति दिए बयान की एडवोकेट धामी द्वारा की गई सख़्त निंदा

श्री अमृतसर साहिब : ८ जनवरी : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने आम आदमी पार्टी की नेता और दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री आतिशी द्वारा दिल्ली विधान सभा में श्री गुरु तेग बहादर साहिब के प्रति अपमानजनक टिप्पणी करने की सख़्त शब्दों में निंदा करते हुए इसे आप नेताओं की घटिया मानसिकता का प्रकटीकरण करार दिया है। एडवोकेट धामी ने कहा कि दिल्ली की आप नेता आतिशी द्वारा दिया गया बयान सिक्ख भावनाओं को ठेस पहुँचाने वाला है, जिसे सिक्ख कौम कभी बरदाश्त नहीं करेगी। उन्होंने कहा कि नवम पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने धर्म की रक्षा के लिए दिल्ली में शहादत दी। दिल्ली की विधान सभा में विरोधी पक्ष की नेता द्वारा गुरु साहिब के प्रति बेहद अपमानजनक शब्दावली का प्रयोग करना दुर्भाग्यपूर्ण है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने माँग की कि विरोधी पक्ष की नेता आतिशी की सदस्यता तुरंत रद्द की जाये। उन्होंने आप आदमी पार्टी की लीडरशिप को भी सवाल किया कि क्या वह अपने इस नेता के विरुद्ध कार्यवाही करेगी?

स. तेजा सिंघ समुंदरी

Registered with PRGI at No. PUNHIN/2007/21665
Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2026-28 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB//R-001/2026-28

GURMAT GYAN February 2026

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,

Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

साका गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब का

हृदयवेधक दृश्य

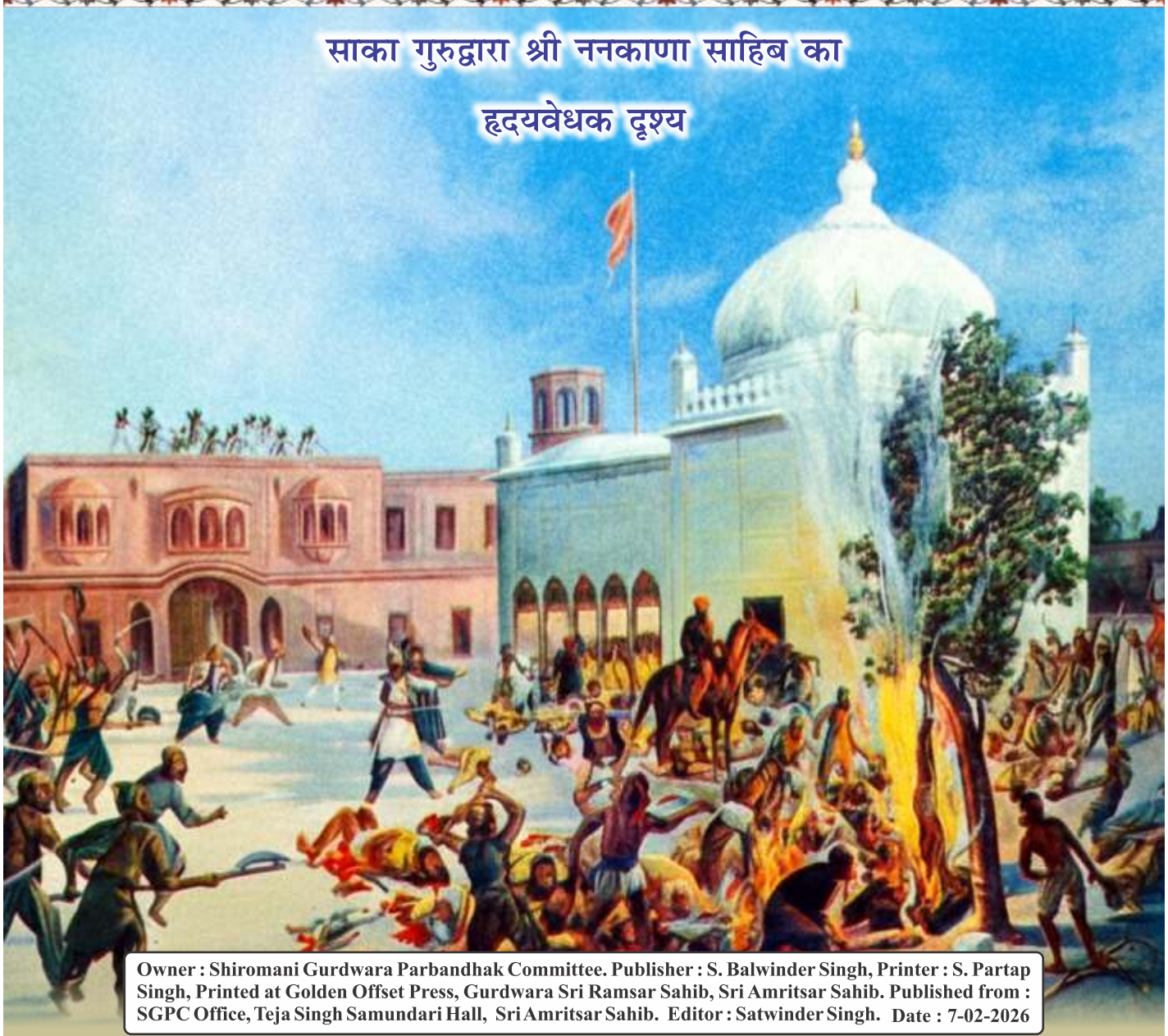

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher : S. Balwinder Singh, Printer : S. Partap Singh, Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar Sahib. Published from : SGPC Office, Teja Singh Samundari Hall, Sri Amritsar Sahib. Editor : Satwinder Singh. Date : 7-02-2026